पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय रेंज हिल्स इस्टेट, पुणे-20

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA

RANGE HILLS ESTATE, PUNE - 20

संस्कृति

SANSKRITI

विद्यालय पत्रिका

सत्र – 2023 - 24

सोना सेठ
उपायुक्त
Sona Seth
Deputy Commissioner

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
संभागीय कार्यालय, आईआईटी. कैम्पस., पवई, मुम्बई 400076-
Regional Office: IIT Campus, Powai, Mumbai-400076.
दूरभाष/ Tel. (022) 2572 8060/2328/6763/1614/0717
Email: kvsmumbairegion@gmail.com WEBSITE: romumbai.kvs.gov.in

संदेश

यह अत्यंत हर्ष और गौरव की बात है कि पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय रेंजहिल्स, खडकी, पुणे सत्र 2023 के लिए अपनी विद्यालय पत्रिका 'संस्कृति' का प्रकाशन करने जा रहा है |

केंद्रीय विद्यालय संगठन विद्यार्थियों की प्रतिभा, रूचि एवं मनोवृत्ति के अनुरूप उन्हें सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान कर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्त्व पिछले 60 वर्षों से बखूबी निभाता आया है | संगठन के हीरक जयंती वर्ष में इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी, शिक्षक तथा कर्मचारीगण को उनके मौलिक विचार, नवाचार तथा मन के भाव साझा करने का एक सशक्त एवं प्रभावी मंच प्राप्त हुआ है | यह पत्रिका विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों के रचनात्मक कौशल और सृजनशीलता को मूर्त रूप देने का भी अवसर प्रदान करती है |

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय रेंजहिल्स, खडकी, पुणे की विद्यालय पत्रिका 'संस्कृति' के प्रकाशन के अवसर पर इस प्रक्रिया से जुड़े सभी विद्यार्थी, शैक्षिक एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों, संपादक मंडल एवं प्राचार्य को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पत्रिका सुरुचिपूर्ण मनोरंजन के साथ ही वैचारिक अभिप्रेरणा भी प्रदान करेगी |

शुभकामनाओं सहित ,

सोना सेठ
(सोना सेठ)
उपायुक्त

संजय हजारी, भा.आ.नि.से.
महाप्रबंधक
SANJAY HAZARI, I.O.F.S.
GENERAL MANAGER

गोला बारूद निर्माणी खडकी
AMMUNITION FACTORY KHADKI
म्युनिशन्स इंडिया लिमिटेड की इकाई
Unit Of Munitions India Ltd.
भारत सरकार का उद्यम
Government Of India Enterprise
रक्षा मंत्रालय/Ministry Of Defence
पुणे/PUNE - 411003
फोन/Tel. : का. Off. 020-25810850, 25810782
Mob. : 9403780391
फैक्स/Fax : (020) 25813205 / 25821875
ई-मेल/e-mail : afk@ord.gov.in

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हो रही है कि पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय, रेंजहिल्स, द्वारा सत्र 2023 के लिए विद्यालय पत्रिका ' संस्कृति' प्रकाशित की जा रही है।

विद्यालय पत्रिका विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा को उजागर करने का सशक्त मंच होने के साथ – साथ वर्ष भर की विद्यालय की गतिविधियों की झांकी प्रस्तुत करती है। जिसके माध्यम से विद्यालय की विशेषताओं एवं उपलब्धियों के बारे में हम सभी को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

पत्रिका के प्रकाशन में विद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। मैं पत्रिका के लेखन एवं प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी शिक्षकों एवं छात्रों को विशेषकर उन छात्रों को बधाई देता हूँ जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित होने जा रही हैं। पत्रिका में पहली बार नाम छपना छात्रों के लिए एक सुखद अनुभूति होती है। यह सुखद अनुभूति छात्रों में नई ऊर्जा भरने के साथ – साथ दूसरे छात्रों को भी प्रोत्साहित करेगी।

पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो तथा सफलता के नए सोपानों को छूए, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

सादर,

(संजय हजारी)

प्रधानाचार्य के कलम से

आपका विद्यालय की पत्रिका 'संस्कृति' में स्वागत है। 'संस्कृति' का नाम संस्कृति, तरुणता, और विद्यालय की विविधता को संकेतित करता है। हमारा उद्देश्य इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान करना है ताकि वे अपनी कला, साहित्य, और अन्य क्षेत्रों मे अपनी प्रतिभा को प्रकट कर सकें। हमारा लक्ष्य है कि 'संस्कृति' विद्यालय की विविधता को प्रस्तुत करके सभी छात्रों के सामर्थ्य को बढ़ावा दे।

मुझे गर्व है कि हमारे विद्यालय की पत्रिका, 'संस्कृति', अब हमारे विद्यालय की संवाद का महत्त्वपूर्ण माध्यम बन चुकी है। यह पत्रिका हमारे छात्रों और शिक्षकों की सोच, कला, साहित्य, और संस्कृति को प्रकट करने का एक माध्यम है।

'संस्कृति' सिर्फ पत्रिका नहीं, बल्कि यह एक मंच है जहाँ छात्र अपने विचारों, कल्पनाओं और प्रतिभाओं को साझा कर सकते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से, हम विद्यालय की संस्कृति और विरासत को प्रोत्साहित करते हैं, और छात्रों की स्वतंत्रता और रचनात्मकता को महत्त्व देते हैं।

मुझे विश्वास है कि 'संस्कृति' पत्रिका हमारे विद्यालय के समुदाय को एक साझा अनुभव का माध्यम प्रदान करेगी।

इस मैगजीन में छात्रों ने अपनी रचनात्मकता, विचारों, और सोच को साझा किया है और यहाँ पर उनकी बातें सुनी और समर्थित की गई हैं। हमने छात्रों के द्वारा लिखी गई लेखों, कविताओं, और संवादों को प्रकाशित करके उनके योगदान को सम्मान दिया है।

हम सभी 'संस्कृति' मैगजीन की टीम आपको साधारणत: छात्रों के द्वारा बनाया गया होने का गर्व महसूस करते हैं।

" इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना।

किंतु पहुंचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं है।"

विद्यालय की ई-पत्रिका की प्राण प्रतिष्ठा में अपने अनमोल संदेश एवं शुभाशीष द्वारा विद्यार्थियों की नैसर्गिक प्रतिभा एवं शिक्षकों तथा अभिभावकों के सहयोग एवं संबल हेतु हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, आशान्वित है कि शैक्षिणक सांस्कृतिक एवं समसामयिक परिवेश को नवीन लक्ष्य तथा नवीन मार्ग पर अग्रसर करने में हमारे नैतिक मूल्य अत्यंत सहायक सिद्ध होंगे।

मैं अपने संपादकीय समिति को विशेषरूप से शुभकामनाएं देता हूँ जिनके भगीरथ प्रयास से पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका ।

श्री शरद कुमार कैवर्त

प्रधानाचार्य

संरक्षक

उपायुक्त - श्रीमती सोना सेठ

सहायक आयुक्त - श्रीमती ए पी कच्छप

अध्यक्ष – श्री संजय हजारी

प्रधानाचार्य- श्री शरद कैवर्त

उप – प्राचार्या - श्रीमती शमसा खान

मुख्य-अध्यापक - श्री गोरख मुसले

संपादक

श्रीमती स्वर्णाली दास - स्नातकोत्तर शिक्षिका, अंग्रेजी

श्री विश्वासराव भदाणे - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, अंग्रेजी

श्रीमती मनीषा - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका , अंग्रेजी

श्री अमोल खाड़गे - स्नातकोत्तर शिक्षक , हिंदी

श्री शशांक कच्छावा - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत

श्री जितेन्द्र कुमार नागर - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी

श्री सहज राम मीणा- प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक , हिंदी

छात्र संपादक

कुमार परिणय शर्मा - बारहवीं विज्ञान

कुमार आदित्य मातंगी - बारहवीं विज्ञान

कुमारी कौशानी गुहा – बारहवीं विज्ञान

कुमारी ख़ुशी यादव - बारहवीं विज्ञान

कुमारी श्रावणी राउल - बारहवीं वाणिज्य

कुमारी हरिनी मीनाक्षीनाथन - बारहवीं वाणिज्य

विद्यालय परिवार के सदस्य

क्र. सं	नाम	क्र. सं	नाम
01.	श्री शरद कुमार कैवर्त **(प्राचार्य)**	**संगीत (प्राथमिक)**	
02.	श्रीमती शमसा खान **(उप-प्राचार्या)**	01.	श्रीमती अभया देशपांडे
03.	श्री गोरख मुसले **(मुख्याध्यापक)**		
स्नातकोत्तर शिक्षक		**प्राथमिक शिक्षक**	
01.	श्री गोपाला रेड्डी **(भौतिक शास्त्र)**	01.	श्रीमती सविता पाटनकर
02.	श्री दीपक एस अघम **(रसायन शास्त्र)**	02.	श्रीमती अंजना मिश्रा
03.	श्रीमती सविता शर्मा **(संगणक)**	03.	श्रीमती रत्ना सिंह परिहार
04.	श्रीमती संघमित्रा गौतम **(वाणिज्य)**	04.	श्री जयप्रकाश तुलसे
05.	श्रीमती स्वर्णाली दास **(अँग्रेजी)**	05.	श्री नवनाथ केकान
06.	श्रीमती श्रद्धा पाण्डे **(जीव विज्ञान)**	06.	श्री कुलदीप तिखिले
07.	श्री अभय बीर सिंह **(गणित)**	07.	श्रीमती छाया ढवले
08.	श्री अमोल खाड़गे **(हिन्दी)**	08.	श्रीमती सोनिया रघुवंशी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक		09.	श्री विशाल फ़ाजगे
01.	श्री विश्वासराव भदाने **(अँग्रेजी)**	10.	श्री गणेश आव्हाड़
02.	श्री विजय मोरे **(विज्ञान)**	11.	सुश्री मोना दलवी
03.	श्री शशांक कच्छावा **(संस्कृत)**	12.	सुश्री शैफाली गुप्ता
04.	श्रीमती पूजा आर्य **(गणित)**	13.	श्री विजय
05.	श्रीमती सुमेधा रस्तोगी **(सामाजिक विज्ञान)**	14.	सुश्री दीप्ति
06.	श्री जितेन्द्र कुमार नागर **(हिन्दी)**	15.	श्रीमती नीलम
07.	श्रीमती आरती वर्मा **(सामाजिक विज्ञान)**	**कार्यालय सदस्य**	
08.	श्रीमती मनीषा झा **(विज्ञान)**	01.	श्री ईश्वर जाजोट **(कनिष्ठ सचिवालय अधिकारी)**
09.	श्रीमती मनीषा **(अँग्रेजी)**	02.	श्री सुदेश सारसर **(सब स्टाफ)**
10.	श्री सहज राम मीणा **(हिन्दी)**	03.	श्री भीमराव तापकीर **(सब स्टाफ)**
11.	श्री शुभेन्द्र प्रताप सिंह **(गणित)**		
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक			
01.	श्री आदित्य कुमार सिंह **(पुस्तकालयाध्यक्ष)**		
02.	श्री कोमल सिंह अंगारे **(कार्य अनुभव)**		
03.	श्री आनंद शिंदे **(कला शिक्षा)**		
04.	श्री अभय केने **(स्वास्थ्य शिक्षा)**		

सीबीएसई स्कूल टॉपर 2023

बारहवीं कक्षा

विज्ञान अनुभाग

1) कुमारी भारती मीना - 88.4%

2) कुमारी तेजल जावरे – 86.8 %

3) कुमारी ख्याति पटेल – 86.6%

वाणिज्य अनुभाग

1) कुमारी मारियाह शेख – 88.2 %

2) कुमारी सानिया सिंह – 87 %

3) कुमार तुषार मुखर्जी – 77.2 %

दसवीं कक्षा

1) कुमारी सुरभि दत्ता – 95.6 %

2) कुमारी गौरी मूँदोलकर – 95.4 %

3) कुमारी आपूर्वा आर्या – 95.2 %

हिंदी विभाग

हाय रे परीक्षा

हाय रे परीक्षा
जिस नाम को सुनने से कांपता है हर बच्चा,
वह है परीक्षा,
परीक्षा का पेपर हाथ में आते ही,
इतना डर लगता है,
कि अच्छा नहीं किया,
तो घर पर पीटना पक्का है,
3 घंटे में करने होते हैं लगभग 40 सवाल,
एक भी छूटा,
तो घर पर होता है बवाल,
रिजल्ट के एक दिन पहले,
रात को नींद नहीं आती है,
अच्छे नंबर पाने के लिए,
भगवान की याद आती है,
रखते हैं विद्यार्थी भगवान का व्रत,
अगर फेल हुए तो लगता है होगा,
डंडे से नृत्य,
पास होने पर मिलता है,
शानदार इनाम,
और मुख से निकलता है,
थैंक यू भगवान,
फिर आती है अगली कक्षा,
तब भी मुख से निकलता,
हाय रे परीक्षा

कीर्ति गोणीपुरी
12वीं वाणिज्य

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे–
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?–
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

वंशिका भदाणे
कक्षा 10 अ

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे–
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?–
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

वंशिका बदाणे

कक्षा 10 अ

अनुशासन

अनुशासन का अर्थ

अनुशासन का अर्थ व्यवस्थित और विनियमित तरीके से जीवन यापन करना है यह व्यक्ति को समय सामग्री और संसाधनों का उचित उपयोग करने में मदद करता है| अनुशासन व्यक्तियों को संगठित रखता है और उसे निरंतर उन गतिविधियों में ले जाता है जो उनके लिए अनिवार्य है ताकि वह सफलता हासिल कर सके | यह एक स्वावलंबी और नियमित जीवन शैली को नियंत्रित करता है

अनुशासन के लाभ

अनुशासन के अनेक लाभ हैं जो एक व्यक्ति को शारीरिक,नैतिक और आध्यात्मिक विकास में मदद करते हैं अनुशासन व्यक्ति को समय का प्रबंध, स्वस्थ जीवन शैली, स्वतंत्रता, धर्य और शारीरिक दक्षता का विकास करने में सहायता करता है| इसके साथ-साथ अनुशासन में रहने से व्यक्ति की विचारधारा, नैतिकता और अपने कर्तव्यों के प्रति संवेदनशीलता में सुधार होता है|

अनुशासन का जीवन पर प्रभाव

अनुशासन का सभी के जीवन पर प्रभाव पड़ता है यह हमें जीवन की मुश्किल परिस्थिति में आराम से सोने में मदद करता है, मन को शांत रखने में मदद करता है, जीवन को संतुलित बनता है और बुरे रास्तों पर जाने से रोकता है इन सभी विशेषताओं से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है खासकर विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन की कई विशेषताएं हैं जिससे वह एक अच्छा विद्यार्थी बन सकता हैं|

प्रत्यूश कुमार

कक्षा 10 अ

चिड़िया

कभी पेड़ पर कूदती है
कभी पानी में नाचती है
छोटी-छोटी लकड़ीयों से यह
हंसते-हंसते खेलती है |
छोटी-छोटी लकड़ीयों से यह
अपना घर बनाती है|
ना ही किसी को सताती है
ना ही किसी को रुलाती है
अपनी चैचाहट से सबको सुबह उठती है
फिर भी न जाने क्यों
पिंजरे में कैद पाई जाती है

कार्तिक आगवान
कक्षा 10 अ

अगर संगीत न होता

कोई खूश नहीं रह पाता
कोई काम मन से नहीं कर पाता
अगर संगीत न होता
ये दुनिया बेरंग हो जाती
सरगम के सुर न छिडते
नही ढोल मंजीरे बजते
मन निराशा से भरा रहता
कोई भी प्रसन्न न रह पाता
अगर संगीत न होता

रोहित जबुकर
कक्षा 10

गिरना भी अच्छा है

" गिरना भी अच्छा है, औकात, का पता चलता हैं
बढ़ते है जब हाथ उठाने को..
अपनो का पता चलता है....

जिन्हें गुस्सा आता है. वो लोग सच्चे होते है
मैंने झूठो अक्सर मुस्कुरातें हुए देखा है..

सीख रहे है हम भी ,मनुष्यों को पढने का हुनर,
सुना है चेहरे पे किताबो से ज्यादा लिखा होता है...!

सानिका पवार
कक्षा 10 अ

परीक्षा की तैयारी

परीक्षा मे अच्छे अंक पाने के लिए उसकी तैयारी मैं बहुत पहले से शुरू कर देती हूँ। सबसे पहले मैं एक समय सारणी बनाता हु और अपने समय को सभी विषयों मे बराबर विभाजित करता हूँ। जो विषय मुझे कठिन लगते है उनके लिए में अधिक समय रखता हूँ ।समय सारणी के कारण मै हर शाम खेल सकता हूँ जिसमे मै अपनी पढाई नए विवेक के साथ कर सकता हूँ।

रोहित जबुकर
कक्षा 10

परिश्रम का महत्व

देश दुनिया के प्रसिद्ध लोगों ने अपनी मेहनत परिश्रम के बल से ही दुनिया को यह अद्भुत चीज दी है| आज हमारे महान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी को ही देख लीजिए ये हफ्ते में सातों दिन 17-18 घंटे काम करते हैं ये न कभी त्योहार छुट्टी लेते हैं और ना पर्सनल काम के लिए| देश का इतना बड़ा आदमी जिस किसी को छुट्टी के लिए जवाब ना देना पड़े वह तब परिश्रम करने से पीछे नहीं हटता है | देश को आजादी दिलाने के लिए महात्मा गांधी ने रात-दिन एक करके मेहनत की और आज इसी का फल है कि हम आजाद है| कड़ी मेहनत एक कीमत है जिसका हम सफलता पाने के लिए भुगतान करते हैं और जिस के प्राप्तहोते ही जीवन में खुशियां ही खुशियां आती है| आपको जीवन की सारी सुख सुविधा मिलेगी, लक्ष्मी की प्राप्ति होगी| आज के समय में परिश्रम रूपी धन जिसके पास है वह दुनिया की सुख सुविधा खरीद सकता है| परिश्रम से मानसिक व शारीरिक चुस्ती मिलती है| आज के समय में परिश्रम नहीं करने पर बहुत सी बीमारियां शरीर में घर कर लेती है इसलिए भी तंदुरुस्ती स्फूर्ति के लिए शारीरिक श्रम करने को बोला जाता है जिस वजह से लोग जिम में समय बिताने लगे हैं मानसिक विकास के लिए उसका परिश्रम करते रहना बहुत जरूरी है इसी के कारण लोगों द्वारा दुनिया में नए-नए अनुसंधान किए गए हैं| जीवन में परिश्रम करना बहुत जरूरी है अगर हम आलस करते हैं और परिश्रम से दूर भागते हैं तो अपने जीवन में कभी हम सफल नहीं हो पाएंगे इसलिए अपने जीवन में सफलता पाने के लिए परिश्रम बहुत जरूरी है |

पायल कांबले,

कनक पोत्रे

12वीं वाणिज्य

बदलती वेशभूषा

शब्दकोश में "फैशन" का अर्थ है ढंग या शैली | व्यवहार में उससे अभिप्रेत है परिधान शैली अर्थात वस्त्र पहनने की कला।

इस नाते फैशन कौन नहीं करता, गोरा या काला, मोटा या दुबला प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से वस्त्र पहनता है| अपने अंगों के डील डौल के अनुसार उन्हें सिलवाकर प्रयोग में लाता है| अतः वह फैशन करता है| यहां तक फैशन के विषय में कोई विषय विवाद नहीं| विद्यार्थी है या अध्यापक, लड़की है या लड़का सभी को ऐसा फैशन करने का जन्मसिद्ध अधिकार है किंतु फैशन का यह शाब्दिक अर्थ है|

फैशन पर विवाद तब उठ खड़ा होता है जब हम उसका रूढ़ अर्थ लेते हैं | बनावटी श्रृंगार से दूल्हा दुल्हन का तो संबंध हो सकता है किंतु छात्र और छात्राओं का नहीं क्योंकि वे अभी भी विद्यार्थी है जिस शब्द का अर्थ है की विद्या के चाहने वाले के चाहने वाले|

यदि विद्या के चाहने वाले फैशन को चाहने लगे तो क्या वह अपने उद्देश्य से दूर ना हट जाएंगे वही बात होगी आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास । जब विद्यार्थी फैशन में सीमा का अतिक्रमण कर जाएगा तब विद्या उससे रूठ जाएगी निस्संदेह यह फैशन विद्यार्थियों के लिए महंगा सौदा है| वेस घर वालों के लिए समस्या बन जाते हैं अध्यापक उन्हें सिर दर्द समझते हैं

कीर्ति

वैभव वाल्मीकि

12वीं वाणिज्य

स्त्री सशक्तिकरण: नारीत्व की पुनर्जागरण की ओर

समाज का विकास और प्रगति सिर्फ पुरुषों के जीवन के अधीन नहीं हो सकता| स्त्री सशक्तिकरण जो महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मानसिक रूप से सशक्त बनाने का माध्यम है अत्यंत आवश्यक है| यह एक संघर्षपूर्ण लड़ाई है जिसमें समाज के मूल्य,स्वाभिमान और समानता के बारे में सोचने की जरूरत है|

स्त्री सशक्तिकरण का मतलब है महिलाओं को उनका आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, आर्थिक स्थिति में सुधार और सामाजिक स्थान में मजबूती देने की क्षमता प्रदान करना| इसके माध्यम से महिलाएं स्वयं के निर्णय ले सकती है व्यक्तिगत और सामाजिक सपनों को पूरा कर सकती है, व्यापार कर सकती है, और अपनी आवाज बुलंद कर सकती है|
एक समर्पित और सशक्त महिला समाज की नींव होती है| वह अपने परिवार और समाज के सदस्यों को प्रभावित करने में सक्षम होती है उसकी सक्रियता, समर्पण और क्षमता समाज को नई सोच और प्रगति की ओर ले जाती है| स्त्री सशक्तिकरण के माध्यम से एक महिला खुद को पहचानती है और अपनी क्षमताओं को विकसित करती है यह उन्हें स्वाधीनता की अनुभूति देता है और उन्हें अपने जीवन का नियंत्रण स्वयं के हाथ में लेने की क्षमता प्रदान करता है|

स्त्री सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण पहलू है शिक्षा| शिक्षा महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | शिक्षा महिलाओं को ज्ञान, संचार, कौशल, स्वतंत्रता और स्वावलंबन का अवसर प्रदान करती है| इसके अलावा शिक्षा उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाती है और उन्हें नई संभावना की ओर ले जाती है|
स्त्री सशक्तिकरण में रोजगार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जब महिलाएं आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती है तो वह अपनी प्रतिभा और क्षमताओं का उपयोग करके व्यापार उद्यमिता और स्वरोजगार कर सकती है| यह उन्हें आर्थिक मजबूती स्वावलंबन और सम्मान की अनुभूति देता है|

स्त्री सशक्तिकरण समाज के नेतृत्व और न्याय के लिए भी महत्वपूर्ण है| जब महिलाएं उच्च स्तरीय पदों पर पहुंचती है तो समझ में, विचारों और निर्णय की विविधता आती है| महिलाएं संविधान, नीतियों, योजनाओं और निर्णय में अपनी भूमिका निभा सकती है और उनकी आवाज को समाज में महत्व दिया जाता है|

स्त्री सशक्तिकरण का एक और महत्वपूर्ण पहलू है स्वास्थ्य और सुरक्षा। महिलाएं अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए जागरूक होती है और अपनी सुरक्षा की गर्त में सुरक्षित रहने के लिए उचित साधनों का उपयोग करती है यह उन्हें आत्मनिर्भर बनता है और उन्हें विकास की मुख्य राह पर आगे बढ़ाने में मदद करता है|

स्त्री सशक्तिकरण के लिए समाज को नारीत्व के मूल्यों को पुनर्जागरण करने की आवश्यकता है | इसमें सभी समाज के सदस्यों का सहयोग और योगदान शामिल होना चाहिए| स्त्री सशक्तिकरण न केवल महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि समाज के समस्त वर्गों के लिए भी आवश्यक है एक समर्पित शक्तिशाली और सम्मानित महिला समाज का निर्माण करती है और समग्र विकास में अहम योगदान देती है|

स्त्री सशक्तिकरण एक दिशा निर्देशक तत्व है जो समाज के लिए महत्वपूर्ण है| महिलाओं को उनकी स्वतंत्रता, समानता और स्वावलंबन की अनुमति देने से हम समृद्धि और समानता की दिशा में एक बड़ा कदम बढ़ा सकते हैं| इसलिए हमें अपने समाज में इसके लिए एक सशक्त समर्पित और सम्मानित महिला सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से समर्थन करना चाहिए| स्त्री सशक्तिकरण के माध्यम से हम एक बेहतर और समर्पित समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं जहां हर एक महिला को समान अवसर, समान अधिकार और सम्मान मिले |

कौसानी गुहा
11वीं विज्ञान

हिंदी भाषा

प्रकृति की पहली ध्वनि **ओम** है|
मेरी हिंदी भाषा भी, इस ओम की ही देन है| देवनागरी लिपि है इसकी, देवों की कलम से उपजी बंगाली, गुजराती, भोजपुरी, डोंगरी, पंजाबी और कई हिंदी ही है इन सब की जननी|
प्रकृति की हर एक चीज अपने में संपूर्ण है
मेरी हिंदी भाषा भी अपने में संपूर्ण है
जो बोलते हैं, वही लिखते हैं
मन के भाव सही उबरते हैं|
हिंदी भाषा ही तुम्हें, प्रकृति के समीप ले जाएगी
मन की शुद्धि तन की शुद्धि, सहायक यह बन जाएगी
कुछ हवा चली है ऐसी यहां
कहते हैं इस मातृभाषा को बदल डालो
बदल सको क्या तुम अपनी माता को
मातृभाषा का क्यों बदलाव करो
देवों की भाषा का क्यों तुम तिरस्कार करो
बदल सको तो तुम अपनी सोच को बदल डालो
हर एक भाषा का तुम दिल से सम्मान करो
हिंद की जड़ों पर आओ हम गर्व करें
हिंदी भाषा पर आओ हम गर्व करें |

कृष ठाकुर
12वीं वाणिज्य
सार्थक रावत

सबको भाए मधुर वाणी

मधुर वाणी के महत्व तो को प्रकट करने वाला दोहा---
कोयल काको दुख हरे, कागा काको देय
मीठे वचन सुनाए के जगे अपनों कर लेय
यू तो कोयल और कौवा दोनों ही देखने में एक से होते हैं परंतु वाणी के कारण दोनों में जमीन आसमान का अंतर आ जाता| दोनों पक्षी किसी को न कुछ देते हैं और ना कुछ लेते हैं परंतु कोयल मधुर वाणी से जग को अपना बना लेती है और कौवा अपनी कर्कश वाणी के कारण भाग जाता है | कोयल की मधुर वाणी कर्ण प्रिय लगती है | और उसे सब सुनने को इच्छुक रहते हैं यही स्थिति समाज की है समाज में वे लोग सभी के प्रिय बन जाते हैं जो मधुर बोलते हैं जबकि कटु बोलने वालों से सभी बचकर रहना चाहते हैं||
इसके अलावा जो मधुर वाणी बोलते हैं उन्हें खुद को संतुष्टि और सुख की अनुभूति होती है इससे व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावी रहा है इससे व्यक्ति के बिगड़े काम तक बन जाते हैं| कोई भी काल रहा हो मधुर वाणी का अपना विशेष महत्व रहा है इस भागम भाग की जिंदगी में जब व्यक्ति कार्य की बोझ, दिखावा और भौतिक सुखों को एकत्र कर पाने की होड़ में तनाव ग्रस्त होता जा रहा है तब मधुर वाणी का महत्व और भी बढ़ जाता है हमे सदैव मधुर वाणी का प्रयोग करना चाहिए |
मधुर वाणी औषधि के समान होती है जो सुनने वालों के तन और मन को शीतल कर देती है इससे लोगों को सुखानुभूति होती है| कड़वी बोली जहां लोगों को जख्म देती है वही मधुर वाणी वर्षो से हुए मन के घाव को भर देती है मधुर वाणी किसी वरदान के समान होती है|

रिया पांडे
श्रद्धा गमे
12वीं वाणिज्य

बदलती तस्वीरें

हर तस्वीर की भी तकदीर होती है ।
कोई दिल में बसती है, कोई दीवार पर होती है ।।

पुरानी एक किताब के पन्नो को जो टटोल।
उसमे रखी तस्वीर ने यादो का पिटारा खोला।

सीने में जब जब सांसो को भरती हूँ ।
तब तब तेरी यादो की गलीयो से गुजरती हूँ ।

जाने कब तुम चुपके से, ये तस्वीर युं रख दिये।
मीठी मीठी यादो को किताबी पननो से टल लिए।।

समय की धूल जैसे गुजरे वक्त के पन्नो पे |
कम होने लगी धीरे- धीरे यादो से आई आखों की नमी ।।

सिर्फ मैं ही नहीं, देखती है मुझे ये तस्वीर भी।
यादों के झरोखो से देख, बदल रही है मेरी तकदीर भी ।।

तु क्या जाने तेरी यादे, कितना मुझे रुलाई है।
किताब मे सिर्फ आज नजर आई है तेरी तस्वीर ||

प्रयाग शुक्ल
शान्तनु पी एम
कक्षा 10 वीं

प्रकृति

हरे हरे खेतों में
बरस रही बूँदें
खुशी खुशी से आया सावन
भर गया मेरा आँगन।

ऐसा लग रहा है जैसे
मन की कलियाँ खिल गयी वैसे
ऐसा की आया बसंत
लेके फुलो का जश्न।।

धूप से प्यासी मेरे तन को
बूँदो ने दी ऐसी अंगडाई
कुद पडा मेरा तन मन
लगता है मैं हूँ एक दामन ||

यह संसार है कितना सुंदर
लेकिन लोग नही उतने अक्लमंद
यह है एक निवेदन
न करो प्रकृति का शोषण |

उत्कर्ष गाडे
कक्षा 10 'अ'

योग

योग शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रण करने मे मदद करता है । शरीर को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है । योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाने जाते है। योग सत्र में मुख्य रूप से व्यायाम, ध्यान , योग आसन शामिल होते हैं। योग दिल को स्वस्थ बनाने में मदद करता है । यह आपके शरीर और नसों में रक्त के प्रवाह को बढाकर अधिक कुशलता से काम करता हैं। योग एक चमत्कार है और अगर इसे किया जाए तो यह आपके पुरे जीवन का मार्गदर्शन करेगा।

श्रावणी मिश्रा

कक्षा 10 अ

शिक्षा में खेलों का महत्व

शिक्षा और खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग होता है| स्वस्थ रहने के लिए खेलों को खेलना बहुत आवश्यक होता है उसी तरह ज्ञान अर्जित करने के लिए शिक्षा का महत्व है| हमारे जीवन में खेलों का महत्व भी है खेलकूद से हमारे शरीर का शारीरिक, मानसिक विकास होता है जिस प्रकार हमें जिंदा रहने के लिए हवा पानी भोजन की आवश्यकता होती है इसी तरह स्वस्थ रहने के लिए खेलकूद की आवश्यकता होती है|

हमारे जीवन में मस्तिष्क के साथ-साथ शारीरिक शक्ति का भी विकास होना आवश्यक है अर्थात मस्तिष्क के विकास के लिए जहां शिक्षा की आवश्यकता होती है वही शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए खेल की आवश्यकता होती है| विद्यार्थियों तथा हम सभी को जीवन में शिक्षा के साथ-साथ खेलकूद को भी शामिल करना चाहिए खेल से केवल शरीर का ही नहीं बल्कि मस्तिष्क और मन का विकास होता है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्ती का वास होता है शिक्षा और खेल को दोनों ही हमारे जीवन में आवश्यक होते हैं अर्थात शिक्षा और खेल एक दूसरे के पूरक होते हैं शिक्षा के बिना खेल कूद का कोई महत्व नहीं होता और खेल कूद के बिना शिक्षा का कोई महत्व नहीं होता जीवन में सफल होने के लिए शिक्षा के साथ-साथ खेल भी आवश्यक होता है |अर्थात शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी कुशल होना आवश्यक है तभी हम अपने जीवन में स्वस्थ और कुशल रह सकते हैं|

आशना परिधि
कक्षा 9

फुटबॉल

फुटबॉल विश्व का सबसे प्रसिद्ध खेल है। यह बहुत ही रोमांचकारी और चुनौतीपूर्ण खेल है जो आमतौर पर दो टीमो के द्वारा युवाओ के आनंद और मनोरंजन के लिए खेला जाता है। यह मनोरंजन का महान स्रोत है जो शरीर और मन को तरोताजा करता है। इस खेल को सॉसर के नाम से भी जाना जाता है।

फुटबॉल की उत्पत्ति

कुछ विशेषज्ञों के अनुसार यह कहा जाता है कि इसकी उत्पत्ति चीन में हुई। । यह दो टीमो के द्वारा खेला जाता है । (जिसमें दोनों टीमों मे 11- 11 खिलाड़ी होते है।), जिनका लक्ष्य एक दूसरे के खिलाफ अधिकतम गोल करना होता है। इस खेल की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता १० मिनट की होती है, जो 45-45 के दो भागों में विभाजित होती हैं।

फुटबॉल खेलने के लाभ

फुटबॉल खेल एक अच्छा शारीरिक व्यायाम है। यह बच्चों और युवाओं के साथ-साथ अन्य आयु के लोगों के लिए भी विभिन्न लाभ प्रदान करता है। यह आमतौर पर स्कूल और कॉलेजों में विद्यार्थियों के स्वास्थ्य लाभ के लिए खेला जाता है। यह विद्यार्थियों के कौशल, एकाग्रता और स्मरण शक्ति को सुधारने में मदद करता है। यह वो खेल है, जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से स्वस्थ और अच्छा बनाता है।

यह अनुमान लगाया जाता है कि लगभग 50 देशों के 2500 लाख खिलाड़ियो के द्वारा यह खेल खेला जाता है, जो इसे विश्व का सबसे प्रसिद्ध खेल बनाता है।

शाहिद रफीक मौहम्मद
कक्षा 12 वीं

जीवन में खेलों का महत्त्व

खेल शारीरिक और मानसिक तंदुरुस्ती को सुधारने का बहुत ही महत्वपूर्ण और सरल तरीका है। आजकल सरकार के महत्वपूर्ण प्रयासों द्वारा खेल के क्षेत्रों में काफी सुधार आया है। पहले कहा जाता था कि "खेलोगे कूदोगे होंगे खराब, पढ़ोगे - लिखोगे तो बनोगे नवाब"।' समय में बदलाव के कारण अब इस धारणा में बदलाव आ गया है अब खेल यश, धन पद और प्रतिष्ठा पाने का माध्यम बन गया है। विज्ञापन कंपनियाँ करोड़ों का सालाना अनुबंध करती है। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, एशियाई खेलों मे या ओलंपिक स्तर पर पदक जीतने पर केंद्र एवं राज्य सरकार पुरस्कार एवं भारी राशि देने के अलावा शानदार नौकरियों का प्रस्ताव भी देती हैं।

खेल और स्वास्थ्य का अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। यह हमारे शारीरिक और मानसिक सन्तुलन को बनाए रखता है, इसके साथ ही यह हमारे एकाग्रता और स्मरण शक्ति को सुधारता है। खेल हमारे शरीर में रक्त संचार बढ़ाता है। जिससे शरीर स्वस्थ्य बनता है। इसके आलावा खेलो से शरीर लचीला, फुर्तीला, ऊर्जावान तथा बलवान बनता है। खेल लोगो को सुख-दुख को समान भाव से अपनाने की प्रेरणा देते हैं। खेल मनुष्य में ईमानदारी, सहनशीलता, सामंजस्य बिठाना तथा क्षमा करने जैसे गुणों का विकास करते हैं। इसके अलावा खेल मनुष्य को अनुशासन में रह कर काम करना सिखाते है। खेल बहुत तरीकों से हमारे जीवन को उन्नत करने का कार्य करते हैं। खेल व्यक्ति का सम्मान तथा राष्ट्र का गौरव बढ़ाते है। यह एक व्यक्ति की कुशलता , कार्य क्षमता को सुधारता है और साथ ही मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है। यह हमे निरंतर कार्य और अभ्यास करना सिखाता है। हमें अपनी रूचि के अनुसार खेलो में अवश्य भाग लेना चाहिए। खेल और शिक्षा
दोनों को अपने जीवन में एक साथ अपनाकर हम महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते है।

क्षितिज वाघमारे
कक्षा 12 वीं ब

अंतिम ऊँचाई

कितना स्पष्ट होता आगे बढ़ते जाने का मतलब
अगर दसों दिशाएँ हमारे सामने होती
हमारे चारों ओर नहीं।
कितना आसान होता चलते चले जाना
यदि केवल हम चलते होते
बाकी सब रुका होता ।

मैंने अक्सर इस उल-जुलूल दुनिया को
दस सिरों से सोचने और बीस हाथों से पाने की कोशिश में
अपने लिए बेहद मुश्किल बना लिया है।

शुरू-शुरू में सब यही चाहते है
कि सब कुछ शुरू से शुरू हो,
लेकिन अंत तक पहुँचते पहुँचते हिम्मत हार जाते हैं
हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती
कि वह सब कैसे समाप्त होता है ।
जो इतनी धूमधाम से शुरु हुआ था। हमारे चाहने पर।

दुर्गम वनों और ऊंचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अंतिम ऊँचाई को भी जीत लोगे-
तब तुम्हें लगेगा कि कोई अंतर नहीं बचा अब
तुमनें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है-
जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ का पहला तूफान झेलोगे
और कांपोगे नहीं-
तब तुम पाओगे कि कोई फर्क नहीं
सब कुछ जीत लेने में
और अंत तक हिम्मत न हारने में।

कुँवर नारायण प्रस्तुत
जय प्रकाश
कक्षा 10 वीं अ

एक सवाल

आओ, पूछे एक सवाल !
मेरे सिर में कितने बाल ?
कितने आसमान में तारे ?
बतलाओ या कह दो हारे!
नदियाँ, क्यों बहती दिन-रात ?
चिड़ियाँ क्या कहती है बात ?
क्यों कुत्ता, बिल्ली पर धाए?
बिल्ली क्यों चूहे को खाए ?
फूल कहाँ से पाते रंग ?
रहते क्यों न जीव सब संघ ?
बादल क्यो बरसाते पानी?
लड़के क्यो करते शैतानी ?
नानी की क्यो सिकुड़ी खाल'?
अजी, न करो ऐसा सवाल!
यह सब ईश्वर की माया है,
इसको कौन जान पाया है ? ,

चंचल कुमारी
कक्षा 10 वीं अ

नर हो, न निराश करो मन को

कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को ।

संभलो कि सुयोग न जाय
चला कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो,न निराश करो मन को।

नाम – ईशान निर्वाण
कक्षा– 6 (स)

एक किताब पढ़नी चाहिए

किताब का कोई धर्म नहीं होता ।
ज्ञान का कोई अंत नहीं होता ।
जहां से अच्छी सीख मिली ले लेनी चाहिए
एक किताब पढ़नी चाहिए।
किताब से बढ़कर कोई मित्र नहीं होता
किताब से बढ़कर कोई सच्चा मीत नहीं होता ।
जहां ऐसे रिश्ते मिले समेटलेनेचाहिए ।
एक किताब पढ़नी चाहिए।
किताब ज्ञान की खान है।
जो होती सबसे महान है।
जो देता इंसान को मौका बदलने का
तो बदल जाना चाहिए ।
एक किताब पढ़नी चाहिए।
मंजिल तक जो पहुंच आती है
हर इंसान को राह दिखाती है।
उसे राह पर चलकर मंजिल पानी चाहिए
एक किताब पढ़नी चाहिए।

औरस
कक्षा 9 स

प्लास्टिक प्रदूषण

जागरूकता अभियान
पर्यावरण को स्वच्छ बनाने का संकल्प करें,
प्लास्टिक के उपयोग को कम करें।

प्रस्तावना :

प्लास्टिक प्रदूषण हमारे पर्यावरण को काफी तेजी से नुकसान पहुंचा रहा है| प्लास्टिक एक ऐसा सामग्री है जो विघटित नहीं होता है प्लास्टिक नदियों, झीलों और सागरों के जल को भीषण रूप से प्रदूषित करता है प्लास्टिक मिट्टी के साथ मिश्रित नहीं होता है और हजारों वर्षों तक यूं ही जमीन और समुद्र के ताल में पड़ा रहता है|

प्लास्टिक प्रदूषण के कारण:

1. सख्त और आसानी से मिलने वाला

पॉलिथीन के बैग आसानी से बनते हैं और सस्ते होते हैं इसलिए सब जगह इसी का उपयोग ज्यादा होता है इसी पॉलिथीन की वजह से नदी नाले अटक जाते और भयंकर बीमारी का फैलाव करते हैं

2. अघुलनशील पदार्थ

प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का कचरा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है क्योंकि प्लास्टिक एक अघुलनशील पदार्थ है इसका सीधा सा मतलब होता है कि यह पानी और धरती पर गलता नहीं है इसी कारण प्लास्टिक हमारे जीवन में बहुत ही ज्यादा खतरनाक होता है|

शिक्षा : हमें कभी कचरा प्लास्टिक या पॉलीथीन नहीं फैलाना चाहिए

सौम्यदीप मंडल
कक्षा 6 अ

जीने की राह

संत एकनाथ के पास एक आदमी गया और पूछा महाराज दुनिया मे किस तरह से रहना चाहिए? संत ने कहा सामने आ पहले तेरा माथा देखूं कि तेरा जीवन बाकी भी है कि नहीं। वो आदमी सामने आया और माथा दिखाया| संत ने कहा तेरी तो सात दिनों मे मौत है, अब तू कहे तो बताऊं ? आदमी बोला फिर रहने दो। वो भागता हुआ गया। सबसे पहले उसने उन लोगो से माफी मांगी जिनको उसने भला बुरा कहा था। फिर जिन लोगो से झगड़ा किया था. बेईमानी करी थी उनसे भी जाकर माफी मांगी। घर जाकर बच्चो को बच्चो को गले लगाया,पत्नी से बोला मेरी यात्रा करने का मन हो रहा है, मैं भगवान का सहारा ले रहा हूँ हो सकें तो तू भी भगवान का सहारा ले ले। इस तरह से छः दिन बीत गए। सातवे दिन वो भगवान के ध्यान में बैठा, मन बड़ा हल्का था। फिर उसे ध्यान आया कि एक बार संत से चलकर एक पुछ लेता हूँ कि अगले जन्म में कैसे जीना है, फिर वैसे जी लेंगें।भागा भागा गया संत के पास पूछा-महाराज किस तरह से दुनिया मे जीना चाहिए ? संत ने कहा कि पहले ये बता कि ये सात दिन कैसे बीते कितने लड़ाई-झगड़े किए ? किस-किस से बेईमानी की? आदमी बोला महाराज कोई लड़ाई-झगड़े नही किए। बल्कि जो पुराने थे उनसे भी माफी जाकर मांग आया हूं और उन्होने ने भीँ माफ कर दिया है। संत ने फिर पूछा –अच्छा। इन सात दिनों में भगवान को याद किया कि नहीं ? ये बोला महाराज भगवान को ही याद किया क्योंकि मौत सामने थी। संत ने कहा तो फिर जा बाकी की जिंदगी भी ऐसे ही बीता । आदमी बोला - पर आपने तो हमारा माथा देखा था। सातवे दिन मौत बताई थी मौत तो इस पर संत ने कहा सात दिनो मे ही है- सोमवार, मंगलवार ,बुधवार,गुरुवार, शुक्रवार,शनिवार,इतवार यही सात दिन है मनुष्य इन्ही सात दिनों में जन्म लेता है और मृत्यु को प्राप्त होता है।

नाम – आयुष कुमार
कक्षा–दसवी –स

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास... यह मानवी चरित्र का मौलिक गुण तथा उसके जीवन-पथ का प्रबल संबल है। यह गुण मनुष्य को घर-परिवार व समाज के संस्कार से मिलता है तथा शिक्षण-अभ्यास से यह विकासित होता है। जो आत्मविश्वास का अलख जगाकर जीवन के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उसके समक्ष आपदाओं के पर्वत ढह जाता है और मंजिल सदा उसकी प्रतीक्षा करती रहती है। जिसके पास आत्मविश्वास का बल है, वह विचलित नहीं होता, बल्कि नए संकल्प, नए उत्साह से आगे पराजय के क्षणों मे भी अंततः विजय प्राप्त करता है।

वस्तुतः आत्मविश्वास के अंकुर से प्रयत्न का पौधा उगता है और प्रयत्न के लहलहाते पौधे पर ही सफलता के मधुर फल लगते हैं। आत्मविश्वास मनुष्य को कठित क्षणों मे मुश्किलों और परेशानियो से जूझना सिखाता है। आत्मविश्वास मनुष्य के भीतर छीपी उस अपार शक्ति को बाहर निकालने में सहायक होती है जिसके बारे मे व्यक्ति स्वयं नही जानता। यह मनुष्य के भीतर संघर्ष की भावना भरता है और कठिन से कठिन परिस्थितियों पर हावी होने की क्षमता का विकास करता है।

नाम - श्रावणी राऊल
कक्षा 12 वी वाणिज्य

इंटरनेट का उपयोग

इंटरनेट को विज्ञान की अद्‌भुत देन कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं हैं। वास्तव मे इंटरनेट सूचनाओं एवं जानकारियों का विस्तृत जाल है। इसमें एक-दो नहीं करोड़ों पन्नों की जानकारी भरी है। इंटरनेट की मदद से हम अपनी इच्छित जानकारी और जिज्ञासा का हल कुछ ही पल में कंप्यूटर की मदद से पा सकते हैं। इसकी सहायता से हम कुछ ही क्षण में दुनिया से जुड़ जाते हैं। अपने विचित्र गुण के कारण इंटरनेट तेजी से युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रहा है।

यह ऐसा माध्यम है जिसमें संचार के लगभग साधनों के गुण समाए हैं। इंटरनेट अपने आप में विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें दुर्लभ जानकारियों से भरी अनेकानेक 'पुस्तकें समायी हैं। इसकी पहुँच दुनिया के कोने-कोने तक है। इंटरनेट बहु उपयोगी साधन है। इसके माध्यम में मनोवांछित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तो घर बैठे सिनेमा या हवाई जहाज के ई –टिकट बुक करवा सकते हैं। यह पढ़ने लिखने वालों तथा शोधकर्ताओं के लिए वरदान हैं। इंटरनेट का सावधानीपूर्वक उपयोग न करने पर इसके दुरुपयोग की संभावना रहती हैं। इंटरनेट की अश्लील सामग्री से युवाओं का कोमल मन दिग्भ्रमित हो रहा है। विवेकपूर्वक उपयोग करने पर यह वरदान सरीखा हैं।

नाम– जान्वी घोरपडे
कक्षा –12 'ब'

जिंदगी की नई शुरुवात

संसार की सबसे मूल्यवान वस्तु समय होता है लेकिन वर्तमान में ज्यादातर और खासकर विद्यार्थी इस बात को भूल चुके है। क्योंकि देखा जाए तो वे नई-नई टेक्नोलाजी के आ जाने से उनकी जिंदगी बहुत व्यस्त हो गई है। खासकर मोबाइल उनके करियर में बड़ी बाधा बन चुका है। कोई गेम खेलने पर में तो कोई सोशल मीडिया पर व्यस्त है। इससे आप भविष्य का अंदाजा लगा सकता है। इस तरह वह अपना अनमोल समय गवा देते हैं।

एक नई शुरूआत के लिए हमें अपनी सोच व मान्यताओं को बदलना होगा, क्योंकि सफलता उसी को प्राप्त होती है जो बिना समय को गवाए मेहनत करें। सबसे पहले हमें इस धारणा को बदलना होगा कि हमारे साथ वही होता है जो भाग्य में लिखा होता है क्योंकि ऐसा होता तो आज हम ईश्वर की पूजा न करके उन्हें ही कोसते, किन्तु हमारे साथ जो कुछ भी होता है उसके ज़िम्मेदार हम स्वयं होते है इसीलिए खुश रहना या ना रहना हम पर ही निर्भर करता है।

भगवान उसी की मदद करते है जो अपनी मदद खुद करता है। अगर कोई व्यक्ति यह सोचता है कि हमारे साथ जो कुछ भी होता है वह हमारे हाथ में नहीं तो वह व्यक्ति इस गलत धारणा बदल ले या इसके भुगतान के लिए तैयार रहें। हमें जिंदगी की एक नई शुरूआत करनी चाहिए जिसमे समय का मान हो और सही उपयोग हो | ना कि सब कुछ किस्मत पर छोड़ देना। हमें जिंदगी में कर्म करना चाहिए ना कि फल की चिंता ।

नाम:- प्रभा साना

लेखन परिदृश्य : जीवन में अच्छे और बुरे लोगो की परख

अक्सर हमारे जीवन में कई बार ऐसे लोग आ जाते है जहाँ हम अच्छे और बुरे का फर्क नही समझ पाते है और यह जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसा बनाना चाहते है। ऐसे लोग ना तो आगे बढ़ते है और ना किसी और को आगे बढ़ने देते है। अब अच्छे लोगो की एक खासीयत होती है कि वह अच्छे और बुरे का फर्क जान लेते है। अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आपकी प्रेरणा के सोत्र भी बनते है। अपने साधनों का सही उपयोग कहाँ और कैसे करना है यह वो भलीभांति समझ सकते हैं। 'नीम' कड़वा जरूर होता है लेकिन ज्यादा तर बिमारियों में नीम हकीम है। कुछ लोग नीम की तरह होते है किन्तु वह ही आपके सच में साथी व सच्चे हितैषी भी होते है। ऐसे अच्छे, सच्चे और ईमानदार लोगो से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है। इन्हें जो कहना होता है वह सामने ही कह देते हैं, उनकी बातें बिल्कुल खरी होती है। यहाँ बुरे लोगो से मेरा यह मानना है कि ये मानव की प्रकृति है कि वो नकारात्मकता की ओर जल्द ही आकर्षित हो जाते हैं। मैं यह नहीं कह रही सब लोग एक जैसे ही होते हैं। कुछ नकारात्मक होते है तो कुछ सकारात्मक, कुछ आपका साथ जीवन के हर मोड़ पर देते है तो कुछ कभी साथ नहीं देते | इसीलिए हमें बहुत सोच-समझकर अपने आस-पास के लोग चुनना चाहिए जो हमें और हमारी तरक्की में खुश हो सके ना की दुखी। आशा करती हूँ की आपको मेरे इस प्रेरणादायक लेख से कुछ सीखने को मिला होगा।

प्रभा साना
कक्षा:- 12-ब

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था - "लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है।" हमारे देश भारत में बहुत से ऐसे इलाके है जहां समाज में महिलाओं को उचित अधिकार व सम्मान नहीं दिया जाता। उन्हें प्रत्येक दृष्टि से पुरुषों से कम ही आता जाता हैं। इसीलिए हमें महिला सशक्तिकरण की अति आवश्यकता हैं। महिला के प्रति होने वाले अन्याय, शोषण और असमानता को हेतु नारियों को सशक्त करना समाज की प्रथम आवश्यकता है। इसके अंतर्गत महिलाओं को जरूरी कानूनी सुरक्षा भी प्रदान की जाती है।
"नारी जब सशक्त बनेगी, विकास की लहर चलेगी।" "जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आंखो में पानी" ||

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत एक पुरुष प्रधान देश है। जहां हर क्षेत्र में पुरुषों का वर्चस्व है। और महिलाओं को केवल - परिवार की देख भाल के लिए जिम्मेदार माना जाता हैं। भारत में लगभग 50% आबादी केवल महिला द्वारा कवर की जाती है। देश का पूर्ण विकास आधी आबादी का मतलब महिलाओं पर निर्भर करता है जो कि सशक्त नहीं है और कभी भी कई सामाजिक बाधाओं द्वारा प्रतिबंधित है। ऐसी स्थिति में हम यह नहीं कह सकते कि हमारा देश भविष्य में अपनी आधी आबादी के सशक्तिकरण के बिना विकसित होगा, महिलाओं के बिना यदि हम अपने देश को एक विकसित देश बनाना चाहते हैं। तो सबसे पहले पुरुषों को, सरकार, कानून और महिलाओं के प्रयासों से भी महिलाओं को सशक्त बनाना बहुत आवश्यक है। नारी के साथ भेदभाव कर उनकी शक्ति को कमतर आंकना बिल्कुल गलत है। समाज में लैंगिक असमानता को दूर करने हेतु नारी जाति को सशक्त बनना जरूरी है।

नाम – श्रुति
कक्षा– 12 (विज्ञान)

विद्यार्थी और फैशन

शब्दकोश में 'फैशन'का अर्थ है ढंग या शैली। व्यवहार में
उससे अभिप्रेत है - परिधान शैली, अर्थात् वस्त्र पहनने की कला। है। अपने अंगों इस नाते फैशन कौन नहीं करता। गोरा या काला, मोटा या दुबला प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से वस्त्र पहनता के डीलडौल के अनुसार उन्हें सिलवाकर प्रयोग में वह फैशन लाता हैं। यहाँ तक फैशन के विषय में कोई विशेष विवाद नहीं। विद्यार्थी हो या अध्यापक, लड़की हो या लड़का, सभी को ऐसा फैशन करने का जन्मसिद्ध अधिकार है। किंतु फैशन का राह शाब्दिक अर्थ हैं।
फैशन पर विवाद तब खड़ा होता है जब हम उसका रूढ़ अर्थ लेते है — बनाव-सिंगार। बनाव- - सिंगार से दूल्हा-दुलहन का तो संबंध हो सकता है, किंतु छात्र और छात्राओं का नहीं, क्योंकि अभी वे विद्यार्थी हैं, जिस शब्द का अर्थ है कि विद्या के चाहनेवाले। यदि विद्या के चाहनेवाले फैशन को चाहने लगें तो क्या वे अपने उद्देश्य से दूर न हट जाएँगे? वही बात होगी,`आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास'। जब विद्यार्थी फैशन में सीमा का अतिक्रमण कर जाएगा तो विद्या उससे रूठ जाएगी।

कविवर रवींद्रनाथ टैगोर ने ' नकल का निकम्मापन' नामक अपने लेख में लिखा है, "नकल करके वस्त्रों के आयोजन और यत्न में लगे रहने से बढ़कर मूर्खतापूर्ण कार्य मुझे दिखाई नहीं देता।"

वस्तुतः विद्यार्थियों के इतिहास में कृत्रिम दिखावे की सनक कभी भी उतनी प्रबल नहीं थी जितनी आज के युग में दिखाई देती है। अधिकांश छात्र गली-मुहल्ले में जिस प्रकार के वस्त्र देखेंगे, वैसे ही वस्त्रों की माँग माता-पिता से करेंगे । ऐसा क्यों ? "इसलिए कि वे अपने वस्त्रों से और रहन-सहन से स्वयं को इतना धूनी विखाना चाहते हैं, जितने वे वास्तव में नहीं हैं। इतना सुंदर बनना चाहते हैं, जितने वे न भ कभी थे, न हैं और न ही भविष्य में कभी होगे। दूसरों की आँखो को प्रसन्न करने के लिए इतना बड़ा आयोजन करके वे केश और देश के फेर में इतना समय व्यर्थ खो देते है कार्यो के लिए उनके पास जाता अपना कि अन्य महत्त्वपूर्ण न तो समय ही रह हैं , न रुचि, न धन और न सामर्थ्य ही। भला उन्हें कौन बुद्धिमान कहेगा। यह की फिजूलखर्ची हैं। समय का अपव्यय हैं, 5 धन निस्संदेह यह फैशन विद्यार्थियों के लिए महँगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते हैं। अध्यापक उन्हें सिरदर्द समझते है। समाज उन्हें भावी भारत समझता है, क्योंकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य का को भूल जाते हैं। हमारी वेशभूषा प्रभाव दूसरों उद्देश्य 'विद्या' अच्छा या बुरा की अपेक्षा हमपर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन का वह कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, धर्म से भी नहीं मिलती।

नाम :-कीर्ती
कक्षा 12 वाणिज्य

भारत के राष्ट्रीय चिन्ह और उनका अर्थ

हर एक राष्ट्र की अपनी एक अलग पहचान होती है, जिसे सर्वसम्मति से सबक द्वारा स्वीकार किया जाता है. राष्ट्र की पहचान, राष्ट्र के प्रतीक एवं वहां के नागरिकों से होती है. देश के राष्ट्रीय प्रतीक का अपना एक इतिहास, व्यक्तित्व और विशिष्टता होती है. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक देश का प्रतिबिम्ब है, जिसे बहुत सोच समझकर चुना गया है. हमारे देश के राष्ट्रीय ध्वज की डिजाईन आजादी के पहले 22 जुलाई 1947 को चुनी गई थी. हमारे देश भारत के राष्ट्रीय प्रतीक निम्न हैं:

राष्ट्रीय ध्वज (National Flag Of India) -

भारत देश का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा, भारत देश की शान का प्रतीक है, तिरंगे में तीन रंग की पट्टियाँ समान अनुपात में है. इसमें सबसे उपर गहरा केसरिया रंग है, जो साहस और बलिदान का प्रतीक है. बीच में सफ़ेद रंग की पट्टी शांति और सच्चाई का प्रतीक है. सबसे नीचे हरा रंग विश्वास, समर्धि और हरियाली का प्रतीक है. तिरंगे में बीचों बीच सफ़ेद रंग के उपर नीले रंग से अशोक चक्र बना हुआ है. जिसने 24 धारियां है. ये ध्वज स्वराज ध्वज की तरह है, जिसे पिंगली वेंकाया ने डिजाईन किया था.

राष्ट्रीय प्रतीक (National Emblem of India) -

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह सारनाथ के अशोक में सिंह की अनुकृति है. गोलाई में बनी इस आकृति में चार सिंह के मुंह है, जो एक दुसरे को थी दिखाए हुए बने है. ये आकृति शक्ति, साहस और जीत का प्रतीक है. इसके साथ ही इसमें नीचे की ओर एक हाथी, एक घोड़ा, एक बैल और एक शेर की आकृति बनी हुई है, इसके बीच में अशोक चक्र भी बना हुआ है. 26 जनवरी 1950 को जब देश का संविधान लागु हुआ था, तब इसे देश का राजकीय प्रतीक के रूप में अपना गया था. इसे एक ही पत्थर पर नक्काशी करके बनाया गया है. इसके नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है, जिसे हिन्दू वेद से लिया गया है. यह आज भी सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है, इस आकृति के सुपर धर्मचक्र भी बना हुआ है. गणतंत्र दिवस इतिहास यहाँ पढ़ें.

राष्ट्र गान (National Anthem of India) -

हमारे देश का राष्ट्रगान 'जनगणमण' देश की आन बान शान है. यह संस्कृत, बंगाली में महान लेखक रविन्द्रनाथ टैगोर जी ने लिखा था. रवीन्द्रनाथ टैगोर जी जीवनी के बारे में यहाँ पढ़ें. इसे सबसे पहले कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मीटिंग में 27 दिसम्बर 1911 को गाया गया था. इसे अधिकारिक रूप से राष्ट्रगान के रूप में मान्यता 24 जनवरी 1950 को मिली थी. उस समय बंगाली गाना 'वंदेमातरम्' को गैर हिन्दुओं के विरोध का सामना करना पड़ रहा था, जिसके बाद जनगणमण को राष्ट्रगान घोषित किया गया. राष्ट्रगान को गाते समय कुछ नियमों का पालन करना चाहिए, वे इस प्रकार है-

1. राष्ट्रगान का जब भी गाया या बजाया जाये, श्रोताओं का खड़ा होना अनिवार्य है.
2. राष्ट्रगान को गाने या बजाने से पहले सुचना देना अनिवार्य है.
3. झंडा बंधन के बाद राष्ट्रगान गाना अनिवार्य है.
4. किसी भी कार्यक्रम में राष्ट्रपति के आने एवं जाने पर राष्ट्रगान गया जाता है.
5. परेड की सलामी, सेना के कार्यक्रम के द्वारा राष्ट्रगान गाया जाता है.
6. विद्यालय, सरकारी कार्यालयों में दिन की शुरुवात राष्ट्रगान के द्वारा की जा सकती है.
7. राष्ट्रगान की महिमा, गौरव, आदर का जिम्मा हर एक नागरिक का होता है

राष्ट्रीय गीत (National Song of India) -

देश का राष्ट्रीय गीत संस्कृत में बंकिमचन्द्र चटोपाध्य द्वारा लिखा गया था. स्वतंत्रता प्राप्ति की लड़ाई के समय, ये गाना सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा देता था, उह उनमें नयी उर्जा भर देता था. भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में यहाँ पढ़ें. शुरुवात में वंदेमातरम् राष्ट्रीय गान हुआ करता था, लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् जनगणमण को

राष्ट्रीय गान घोषित किया गया. लेकिन इसके बाबजूद वंदेमातरम् को जनगणमण जितना सम्मान प्राप्त है. सबसे पहले ये गीत 1896 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सेशन में रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा बजाया गया था. 2003 में हुए एक पोल के दौरान इसे दुनिया के 10 मोस्ट पसंदीदा गानों के रूप में स्थान प्राप्त है. 24 जनवरी 1950 को इसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा मिला था. संविधान लागु के समय राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि 'वंदेमातरम् गाना एक एतिहासिक गाना है, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसे जनगणमण जितना अधिकार मिलना ही चाहिए.' डॉ राजेन्द्र प्रसाद के जीवन के बारे में यहाँ पढ़ें.

राष्ट्रीय कैलेंडर (National Calendar of India) -

साका कैलेंडर को राष्ट्रीय कैलेंडर का दर्जा प्राप्त है. इसे कैलेंडर कमिटी द्वारा 1957 में बनाया गया था, जिसे भारतीय पंचाग की मदद से तैयार किया गया है. इसमें हिन्दू धार्मिक कैलेंडर के अलावा खगोल डाटा, समय भी लिखित है.

राष्ट्रीय फूल (National Flower of India) -

भारत देश का राष्ट्रीयफूल कमल (Lotus) है. इसका प्राचीन भारत के इतिहास में भी विशेष स्थान है. कमल का फूल एक बहुत गहरा सन्देश देता है, जिस तरह यह कीचड़ में खिल कर पानी में तैरता रहता है, और कभी नहीं सूखता है, वैसे ही इन्सान को लगातार काम करते रहना चाइये, लेकिन उसके परिणाम की चिंता नहीं करनी चाहिए. यह हिन्दू मान्यता के अनुसार धन की देवी लक्ष्मी का सिंहासन है, जो धन, समृधि का प्रतीक है.

राष्ट्रीय फल (National Fruit of India) -

फलों के राजा कहे जाने वाले आम को भारत देश का राष्ट्रीय फल कहा जाता है. भारत में इसकी 100 से भी ज्यादा वैरायटी मिलती है.

राष्ट्रीय नदी (National River of India) -

भारत की प्रसिध्य पवित्र नदी गंगा को राष्ट्रीय नदी के नाम से सम्मानित किया गया है. इस विशाल नदी गंगा से हिन्दुओं की बहुत सी मान्यता जुड़ी हुई है, वे लोग उन्हें माता के समान पूजते है. इस पवित्र नदी में नहाने से सर पाप धुल जाते है.

राष्ट्रीय वृक्ष (National Tree of India) -

भारत का राष्ट्रीय वृक्ष बरगद है. यह पेड़ बहुत विशाल रूप में बड़ा होता है. यह पेड़ की बहुत लम्बी उम्र होती है, इसलिए इसे अमर पेड़ माना जाता है. भारत में हिन्दू इस पेड़ की पूजा भी करते है.

राष्ट्रीय जानवर (National Animal of India) -

जंगल का राजा शेर को भारत का भी राष्ट्रीय जानवर कहा जाता है. यह भारत की समृधि, ताकत, फुती एवं अपर शक्ति को दिखाता है. इसे राष्ट्रीय जानवर के तौर पर अप्रैल 1973 में घोषणा की गई थी. उस समय इसका उद्देश्य प्रोजेक्ट टाइगर से जुड़ा हुआ था, जिसके अंतर्गत शेरो को बचाने का सन्देश सबको दिया जाता है.

राष्ट्रीय पक्षी (National Bird of India) -

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है. मोर उज्ज्वल रंग की एकता का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही भारतीय संस्कृति को दर्शाता है. इसे 1963 में राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया था. यह सुंदर मोर देश की विभिन्नता को भी दर्शाता है. यह बाकि देशों की तुलना में भारत देश में बहुत अधिक पाया जाता है.

राष्ट्रीय खेल (National Game of India) -

क्रिकेट की अत्याधिक लोकप्रियता के बावजूद होकी भारत देश का राष्ट्रीय खेल है. 1928-1956 के बीच भारत को ओलिंपिक में 6 बार लगातार गोल्ड पदक मिला था. उस समय भारत ने ओलिंपिक में 24 मैच खेले थे, और सब में विजय प्राप्त की थी. इस समय भारत में होकी के खेल को बहुत पसंद किया जाता था, जिस वजह से इसे राष्ट्रीय खेल घोषित किया गया था.

नाम – प्रिया सिंह
कक्षा –12

संस्कृत विभाग:

संस्कृत सूक्तय:

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

अर्थ– अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाये।

परोपकाराय सतां विभूतय:।

अर्थ– सज्जनों की विभूति हमेशा परोपकार के लिए होती है।

विद्या विहीन पशु।

अर्थ– विद्याविहीन (विद्या को ग्रहण ना करने वाला) मनुष्य पशु के समान होता है।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महानरिपु:।

अर्थ– आलस्य मनुष्य के शरीर में स्थित घोर शत्रु है।

अहिंसा परमो धर्म:।

अर्थ– अहिंसा ही सबसे बड़ा (परम) धर्म होता है।

सहसा विदधीत न क्रियाम्।

अर्थ– कार्य को बिना विचारे नहीं करना चाहिए।

नास्ति विद्या समं चक्षु।

अर्थ– संसार में विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र नहीं है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता:।

अर्थ– जिस कुल में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है, उस घर से देवगण प्रसन्न होते हैं।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

अर्थ– शरीर धर्म का मुख्य साधन है।

गुणेर्विहीना बहुजल्पयन्ति।

अर्थ- गुणहीन व्यक्ति बहुत बकवास करते हैं।

हृदया जोशी

कक्षा – नवमी

गुरु एव देव:

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
अर्थात् - गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है। गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। उन सद्गुरु को प्रणाम है।

अखण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
अर्थात् - जो अखण्ड है, सकल ब्रह्माण्ड में समाया है, चर-अचर में तरंगित है। उस (प्रभु) के तत्व रूप को जो मेरे
भीतर प्रकट कर मुझे साक्षात दर्शन करा दे, उन गुरु को मेरा शत् शत् नमन है। अर्थात् वही पूर्ण गुरु है ।

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
अर्थात् - अज्ञानरूपी अन्धकार से अन्धे हुए जीव की आँखें जिसने ज्ञानरूपी काजल की श्लाका से खोली हैं, ऐसे श्री सदगुरू को नमन है, प्रणाम है।

धर्मज्ञो धर्मकर्ता च सदा धर्मपरायणः।
तत्त्वेभ्यः सर्वशास्त्रार्थदेशको गुरुरुच्यते॥
अर्थात् - धर्म को जाननेवाले, धर्म मुताबिक आचरण करनेवाले, धर्मपरायण, और सब शास्त्रों में से तत्त्वों का आदेश करनेवाले गुरु कहे जाते हैं ।

1. **नमोस्तु गुरुवे तस्मै, इष्टदेव स्वरूपिणे।**
यस्य वाग्मृतम् हन्ति, विषं संसार संज्ञकम्।।
अर्थात् - उन गुरूदेव रूपी इष्टदेव को वन्दन है, जिसकी अमृत वाणी अज्ञानता रूपी विष को नष्ट कर देती है।

2. **किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च।**
दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरुकृपां परम्॥
अर्थात् - बहुत कहने से क्या ? करोडों शास्त्रों से भी क्या ? चित्त की परम् शांति, गुरु के बिना मिलना दुर्लभ है ।

3. **गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकार स्तेज उच्यते।**
अन्धकार निरोधत्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥
अर्थात् - 'गु'कार याने अंधकार, और 'रु'कार याने तेज। जो अंधकार का (ज्ञान का प्रकाश देकर) निरोध करता है, वही गुरु कहा जाता है।

राजनंदिनी

कक्षा – अष्टमी – अ

विद्यार्थीजीवनविषयक-श्लोका:

1. विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

भावार्थ: विद्या से विनय अर्थात विवेक व नम्रता मिलती है, विनय से मनुष्य को पात्रता मिलती है यानी पद की योग्यता मिलती है। वहीं, पात्रता व्यक्ति को धन देती है। धन फिर धर्म की ओर व्यक्ति को बढ़ाता और धर्म से सुख मिलता है। इस मतलब यह हुआ कि जीवन में कुछ भी हासिल करने के लिए विद्या ही मूल आधार है।

2. अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।।

भावार्थ: बड़े-बुजुर्गों का अभिवादन अर्थात नमस्कार करने वाले और बुजुर्गों की सेवा करने वालों की 4 चीजें हमेशा बढ़ती हैं। ये 4 चीजें हैं: आयु, विद्या, यश और बल। इसी वजह से हमेशा वृद्ध और स्वयं से बड़े लोगों की सेवा व सम्मान करना चाहिए।

3. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

भावार्थ: महज इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुंह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।

4. यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः।
चित्ते वाचि क्रियायांच साधुनामेक्रूपता।।

भावार्थ: साधु यानी अच्छे व्यक्ति के मन में जो होता है, वो वही बात करता है। वचन में जो होता है यानी जैसा बोलता है, वैसा ही करता है। इनके मन, वचन और कर्म में हमेशा ही एकरूपता व समानता होती है। इसी को अच्छे व्यक्ति की पहचान माना जाता है।

5. न चोरहार्य न राजहार्य ,न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

भावार्थ:एक ऐसा धन जिसे न चोर चुराकर ले जा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, जिसका न भाइयों में बंटवार हो सकता है, जिसे न संभालना मुश्किल व भारी होता है और जो अधिक खर्च करने पर बढ़ता है, वो विद्या है। यह सभी धनों में से सर्वश्रेष्ठ धन है।

6. षड् दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तद्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

भावार्थ: 6 अवगुण मनुष्य के लिए पतन की वजह बनते हैं। ये अवगुण हैं, नींद, तन्द्रा (थकान), भय, गुस्सा, आलस्य और कार्य को टालने की आदत।

7. काक चेष्टा, बको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं।।

भावार्थ: एक विद्यार्थी के पांच लक्षण होते हैं। कौवे की तरह हमेशा कुछ नया जानने की प्रबल इच्छा। बगुले की तरह ध्यान व एक्राग्रता। कुत्ते की जैसी नींद, जो एक आहट में भी खुल जाए। अल्पाहारी मतलब आवश्यकतानुसार खाने वाला और गृह-त्यागी।

रिया कुमारी
कक्षा - अष्टमी स

नीति श्लोका:

1. देवो रुष्टे गुरुस्त्राता गुरो रुष्टे न कश्चन:।
गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता गुरुस्त्राता न संशयः।।

भावार्थ: देवताओं के रूठ जाने पर गुरु रक्षा करते हैं, किंतु गुरु रूठ जाए, तो उस व्यक्ति के पास कोई नहीं होता। गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, गुरु ही रक्षा करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। इसका मतलब यह है कि अगर पूरा विश्व व भाग्य भी किसी से विमुख हो जाए, तो गुरु की कृपा से सब ठीक हो सकता है। गुरु सभी मुश्किलों को दूर कर सकते हैं, लेकिन अगर गुरु ही नाराज हो जाए, तो कोई अन्य व्यक्ति मदद नहीं कर सकता।

2. अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यम निष्ठुर वचनम।
पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि च।।

भावार्थ: अपमान व अनादर के भाव से दान देना, देर से दान देना, मुंह फेरकर दान देना, कठोर व कटु वचन बोलकर दान देना और दान देने के बाद पछतावा करना। ये सभी पांच बातें दान को पूरी तरह दूषित कर देती हैं।

3. अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

भावार्थ: छोटे चित यानी छोटे मन वाले लोग हमेशा यही गिनते रहते हैं कि यह मेरा है, वह उसका है, लेकिन उदारचित अर्थात बड़े मन वाले लोग संपूर्ण धरती को अपने परिवार के समान मानते हैं।

4. सुलभा: पुरुषा: राजन् सततं प्रियवादिन:।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ:।।

भावार्थ: हमेशा प्रिय और मन को अच्छा लगने वाले बोल बोलने वाले लोग आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन जो आपके हित के बारे में बोले और अप्रिय वचन बोल व सुन सके, ऐसे लोग मिलना दुर्लभ है।

5. अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

भावार्थ: सभी 18 पुराणों में महर्षि वेदव्यास जी ने दो विशेष बातें कही हैं। पहली बात तो यह है कि परोपकार करना पुण्य है और दूसरी बात लोगों को दुख देना ही पाप हैं।

मोक्षिता
कक्षा - सप्तमी ब

मम विद्यालयः

मम विद्यालयस्य नाम केन्द्रीय विद्यालय बोलारम् अस्ति। एषः विद्यालयः नगरस्य एकस्मिन सुरम्ये स्थले स्थितमस्ति। अत्र पंचचत्वारिंशत् (45) शिक्षकः-शिक्षिकाः च पाठयन्ति। अत्र चतुर्दशशतमधिकं(1400) छात्राः पठन्ति। विद्यालये एकं सुन्दरं उद्यानं अस्ति। यत्र मनोहाणि पुष्पाणि विकसन्ति। मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अपि अस्ति। यत्र छात्राः पुस्तकानि पठन्ति। मम विद्यालये एका विज्ञान प्रयोगशाला, एका गणित प्रयोगशाला च अस्ति। विद्यालये त्रय: संगणककक्षा: अपि सन्ति। शिक्षायाः क्षेत्रे मम विद्यालयः सम्पूर्णनगरे प्रसिद्ध: अस्ति। मम विद्यालयस्य सर्वे अध्यापकाः शिक्षायाम् अतीव निपुणाः, योग्याः च सन्ति। विद्यालये प्रतिसप्ताहे बालसभा अपि आयोज्यते। प्रतिवर्षे वार्षिकोत्सवः अपि आयोज्यते। क्रीड़ायाः क्षेत्रे अपि मम विद्यालयस्य प्रमुखं स्थानं अस्ति। अहम् आत्मनं गर्वितः, भाग्यशाली च अनुभवामि यत् अहम् अस्मिन अत्युत्तमे विद्यालये पठामि।

हरित मुरगन
कक्षा - सप्तमी अ

माँ

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।
तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ'शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार।

हंसिका रानी
कक्षा - सप्तमी अ

लघुकथा:

शृगालस्य चतुरता

एकदा एकः वायसः पिष्टकं चोरितवान्। पिष्टकं चोरयित्वा सः एकस्यां वृक्षशाखायाम् उपविशति स्म। वृक्षतले शृगालः एकः उपारतः आसीत्। वायसमुखे पिष्टकं दृष्ट्वा तं लालसा अभवत् तदा चतुरः सः शृगालः वायसं प्रति उद्देश्यं कृत्वा गायनासीत्... अहो! अद्भुतसुंदरः विहगः एषः। कण्ठस्वरः अपि मधुरः भवेत्... न जाने कथं मधुरं नु गायति अयम्। वायसः स्वीय प्रशंसा श्रुत्वा गदगद नंदित पुलकितः अभवत्। अतः सः गीतं गायनाय यदा हि चंचु विस्फारितम अकरोत् पिष्टकम अधः पतितवान्। अतः किम्! शृगालः पिष्टकं प्राप्य झटिति धावितवान्।

वेदान्त केकान

कक्षा - षष्ठी अ

उपाय:

एकः वृद्धः आसीत्। सः क्षुधितः अभवत्। समीपे एकः आम्रवृक्षः आसीत्। वृद्धः आम्रवृक्षस्य समीपम् अगच्छत्। वृक्षे बहूनि फलानि अपश्यत्। सः अचिन्तयत्अहं वृद्धः। मम शरीरे शक्तिः नास्ति। वृक्षः उन्नत अस्ति। कथम् उपरि गच्छामि। कथं फलं प्राप्नोमि। वृक्षस्य उपरि वानराः आसन्। वृद्धः एकम् उपायम् अकरोत्। सः पाषाणखण्डान् स्वीकृत्य अक्षिपत्। वानराः कुपिताः अभवन्। ते फलानि अक्षिपन्। वृद्धः तानि फलानि स्वीकृत्य सन्तोषेण अखादत्।

माहेश्वरी पवार

कक्षा - षष्ठी स

अम्लानिद्राक्षाफलानि

एकदा एकः शृगालः अतीव क्षुधार्तः भवन् आसीत्। समग्र वनम् अनुसन्धित्वा अपि सः। तदा सः भोजनस्य अनुसन्धनाय एकस्मिन् ग्रामे उपस्थितम् अभवत्। तत्र एकं वेदिम् उपरि गुच्छानि गुच्छानि द्राक्षाफलानि उलम्बितानि। द्राक्षाफलं दृष्ट्वा शृगालः अतीव मोदितः अभवत्। "अहो! क्षुधाकाले पक्व-पक्व द्राक्षाफलस्य भोजनस्य आनंदं हि अतुलनीयम्" सः अचिंतयत् द्राक्षाफलानि तु अतीव उच्चे आसन्। बहव लम्फ़झम्पात् अपि तानि तस्य हस्तगतः न अभवन्। "द्राक्षाफलानि अम्लानि। अहम् अम्लफलं न द्राक्षाफलानि खादामि।" एतद् उक्त्वा शृगालः स्थानात् गतवान्।

शुभम राय

कक्षा - षष्ठी अ

किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्

एकस्मिन् ग्रामे एक महिला वसति स्म। सा एकं नकुलं पालयति स्म। नकुलस्य विषये तस्याः बहुप्रीतिः आसीत्। महिलायाः एकः शिशुः अपि आसीत्। तस्याः गृहस्य समीपे जलं न आसीत्। जलम् आनेतुं सा दूरं गच्छति स्म।एकस्मिन् दिने जलम् आनेतुं सा अगच्छत्। गृहे कोऽपि न आसीत्। तस्याः शिशुः निद्रितः आसीत्। महिला बहिः गता। तदा एकः सर्पः गृहम् आगतः। नकुलः सर्पम् अपश्यत्। सर्पः शिशुसमीपम् अगच्छत्। नकुलः तत्क्षणे एव सर्पस्य उपरि अपतत्। क्षणमात्रेण एव सः सर्पम् अमारयत्। महिला जलं गृहीत्वा आगता। नकुलस्य मुखं रक्तमयम्। सा अचिन्तयत् अयं नकुलं मम शिशुम् अखादत्। अतः एव अस्य मुखं रक्तम्। सा तत्क्षणे एव एकं शिलाखण्डं नकुलस्य उपरि अक्षिपत्। नकुलः मृतः। अनन्तरं सा गृहस्य अन्तः गता। तत्र शिशुः क्रीडति। तत्रैव मृतं सर्पम् अपश्यत। सा बहु दुःखिता अभवत्। अविचारेण मया नकुलः संहृतः इति सा पश्चात्तापेन पीडिता अभवत्। अतः किमपि कार्यं सहसा न कर्तव्यम्। विचारं कृत्वा एव कर्तव्यम्।

कुषाण गुहा

कक्षा - सप्तमी स

साधूनां जीवनम्

गङ्गातीरे एकः साधुः आसीत्। सः बहु उपकारं करोति स्म। यः अपकारं करोति तस्यापि उपकारं करोति स्म। एकस्मिन् दिने सः गङ्गानद्यां सनानं कर्तुं नदीं गतवान्। नदीप्रवाहे एकः वृश्चिकः आगतः। साधुः वृश्चिकं दृष्टवान्। तं हस्तेन गृहीतवान्। तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। किन्तु सः साधोः हस्तम् अदशत्। साधुः तं त्यक्तवान्। वृश्चिकः जले अपतत्। पुनः साधुः वृश्चिकं गृहीत्वा तीरे स्थापयितुं प्रयत्नं कृतवान्। पुनः वृश्चिकः हस्तम् अदशत्। एवम् अनेकवारं साधुः वृश्चिकं गृहीतवान्। वृश्चिक- अपि अदशत्।नदीतीरे एकः पुरुषः आसीत्।सः उक्तवान्साधुमहाराज। अयं वृश्चिकः दुष्टः। सः पुनः पुनः दशति। भवान् किमर्थं तं हस्ते वृथा स्थापयति। वृश्चिकं त्यजतु।साधुः उक्तवान्वृश्चिकः क्षुद्रः जन्तुः। दंशनं तस्य स्वभावः। सः स्वस्य स्वभावं न त्यजति। अहं तु मनुष्यः। अहं मम परोपकास्वभावं कथं त्यजामि। यः अपकारिणाम् अपि उपकारं करोति सः एव साधुः भवति।

विनती सिंह

कक्षा - नवमी अ

श्रीमद्भगवद्गीता में जनकल्याण की भावना

श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में से एक विशेष ग्रन्थ माना गया है | यह मात्र एक ग्रन्थ नहीं है, बल्कि हजारों वर्ष पहले कहे गए ऐसे उपदेश है जो मनुष्य को आज भी जीवन जीने की कला सिखाते हैं|

श्रीमद्भगवद्गीता के 17वें अध्याय में मानवों के लिए भोजन के प्रकार एवं भोजन सम्बन्धी नियमों पर विशेष प्रकाश डाला गया है | वर्तमान जीवन शैली में मानव ने अपने आहार विहार और भोजन पर पूर्णतःनियंत्रण खो दिया है | बेमेल भोजन करने के कारण से विभिन्न व्याधियों को आमंत्रण दिया है | शादी समारोह जैसे विशेष अवसरों पर केवल दिखावे के चक्कर में प्रत्येक व्यक्ति सौ से अधिक व्यंजनों को आमंत्रित अतिथियों हेतु परोसता है | जिसमेंअधिकांश भोज्य पदार्थ एक दूसरे के विपरीत प्रकृति वाले होते हैं ऐसे विरुद्ध आहार का सेवन करने से मनुष्य अनजाने में अनेक रोगों को आमंत्रण देता है |
श्रीमद्भगवदगीता के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जो भोजन पसंद करता है, वह भी प्रकृति और गुणों के अनुसार तीन प्रकार का होता है |

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।। **(श्रीमद्भगवद्गीता17.7)**

आयु को बढ़ाने वाला, जीवन को शुद्ध करने वाला, बल, अच्छा स्वास्थ्य, सुख प्रदान करने वाला भोजन सात्विक व्यक्तियों को प्रिय होता है |

आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।। **(श्रीमद्भगवद्गीता17.8)**

अत्यधिक तीखा, खट्टा, नमकीन, गर्म, शुष्क, और पेट में जलन उत्पन्न करने वाला भोजन रजोगुण प्रधान व्यक्तियों को प्रिय होता है |

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।। **(श्रीमद्भगवद्गीता17.9)**

प्राय: ऐसा कहा जाता है कि जैसा खाएंगे अन्न वैसा होगा हमारा मन और मन हमारे शरीर कि एकमात्र ऐसी इंद्री है जो शेष दस इन्द्रियों पर नियंत्रण रखती है और मन को स्वस्थ रखने के लिए हमें स्वस्थ भोजन की आवश्यकता होती है | इसलिए हमें सदैव ताजे पके भोजन को ही अपने आहार में शामिल करना चाहिए परन्तु वर्तमान समय में मनुष्यों की जीवनशैली कुछ इस प्रकार कि हो गयी है जिसमें वह शायद काम तो भोजन एवं अन्य मूलभूत आवश्यकताओं को अर्जित करने के उद्देश्य से कर रहा है परन्तु प्राप्त वस्तुएँ किसी भी दृष्टि में हितकारी नहीं है | बाजारों में आसानी से उपलब्ध होने वाले इस प्रकार के भोज्य पदार्थ मनुष्यों में तामसिक प्रवृति को बढ़ाते है |

यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्।। **(श्रीमद्भगवद्गीता17.10)**

अर्थात् – खाने से तीन घंटे पूर्व पकाया गया, स्वादहीन, वियोजित एवंसड़ा, जूठा तथाअस्पृश्य वस्तुओं से युक्त भोजन उन लोगों को प्रिय होता है, जो तामसी होते है |

स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए एक संतुलित जीवन की जरूरत होती है। भगवद् गीता में भगवान कृष्ण ने इसको आदर्श रूप में अर्जुन के सामने रखा है। वे कहते हैं:

युक्ताहारविहारस्य युक्ताचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा। ।। **(श्रीमद्भगवद्गीता6.17)**

अर्थात् –जो व्यक्ति खाने, सोने, आमोद-प्रमोद तथा काम करने की आदतों में नियमित रहता है, वह योगाभ्यास द्वारा समस्त भौतिक

क्लेशों को नष्ट कर सकता है |

आधुनिक वैज्ञानिक शोध भी गीता के इस सूत्र की पुष्टि करते हैं।

वर्तमान की जीवन शैली में मनुष्य काम,क्रोध,लोभ इत्यादि विविध प्रकार के दोषों से युक्त हो चुका है और इन तीनों के कारण ही मानव अनजाने में विविध प्रकार कीसमस्याओंको आमंत्रण दे देता है |एक कामना की उत्पत्ति भी मनुष्य के नरक का कारण बनजाती है | जब उस कामना की पूर्तिहोती है तो लोभ जागृत होता है और कामना की पूर्ति ना होने पर क्रोध की उत्पत्ति होती है इसलिए काम,क्रोध,लोभ को नरक का द्वारमाना गया है |

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः |
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत || **(श्रीमद्भगवद्गीता16.21)**

इसी तत्व को विस्तृत रूप में गीता के द्वितीय अध्याय में प्रकाश डाला गया है –

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात् संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।। **(श्रीमद्भगवद्गीता2.62)**

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।। **(श्रीमद्भगवद्गीता2.63)**

इन्द्रियों के द्वारा विषयों का चिंतन करते रहने से मनुष्यों में आसक्ति उत्पन्न हो जाती है और ऐसी आसक्ति कामना उत्पन्न करती है औरउसी कामना से क्रोध की उत्पत्ति होती है| क्रोध से पूर्ण मोह उत्पन्न होता है ,मोह से स्मरण शक्ति का विभ्रम होता है और जब स्मरण शक्ति भ्रमित हो जाती है तोबुद्धि नष्ट हो जाती है औरबुद्धि नष्ट होने पर मनुष्य भव कूप में पुनः गिर जाता है |

यज्ञ एक विशिष्टवैज्ञानिकऔर आध्यात्मिक प्रक्रिया है , जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है | श्रीमद्भगवदगीता में भगवान श्री कृष्ण ने यज्ञ करने वालो को परमगति की प्राप्ति की बात की है | क्योकि यज्ञ ही उस सर्वव्यापी ब्रह्म का निवास स्थान है |

तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।। **(श्रीमद्भगवद्गीता3.15)**

शतपथब्राह्मण में भी इसका उल्लेख इस प्रकार है –

याज्ञो वै देवानामात्मा ||
(शतपथब्राह्मण9.3.2.7)

गीता में यज्ञ केमहत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि यज्ञ के द्वारा ही मनुष्य को विभिन्न प्रकार की इष्टापूर्तियाँ प्राप्त होती है | यज्ञ के पश्चात् बचे हुए अन्न को प्राप्त करने वाला मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है
गीता में कहा गया है –

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।। **(श्रीमद्भगवद्गीता3.13)**

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।। **(श्रीमद्भगवद्गीता3.14)**

अर्थात् -सारे प्राणी अन्न पर आश्रित है जो वर्षा से उत्पन्न होता है | वर्षा यज्ञ संपन्न करने से होती है और यज्ञ नियत कर्मों से उत्पन्न होता है |

जब हम प्रेमभाव में होते है तब मन व इन्द्रियाँ तृप्त रहती है और हम जो भी हमारे पास है उसी में हम संतुष्ट रहते है लेकिन यह अवस्था क्षणिक होती है| वैसे तो हमारे पास भले कितनी भी सुख सुविधाएँ हो कम ही लगती है और ज्यादा की तलाश बानी रहती है इसी कारण मनुष्य जीवन में सुख का अभाव रहता है | यदि जीवन में सुख चाहिए तो जीवन में संतुष्टि का होना अनिवार्य है |

फल की इच्छा किये बिना कर्म करते रहना आत्मसंतुष्टि के लिए सबसे अच्छा मार्ग है और जब हम अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण कर पाएंगे तब किसी भी स्थितियों एवं वस्तुओं से असंतुष्ट नहीं रहेंगे |

वर्तमान समय में मनुष्यों के जीवन में आत्म संतुष्टि का भी आभाव हो गया है इसलिए वह दुखी रहता है और जो मनुष्य अपने आप में असन्तुष्ट रहता है वह सुखी रहता है|

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्चमानव: |

आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते|| **(**श्रीमद्भगवद्गीता**3.17)**

शशांक कच्छावा
(प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक- संस्कृत)

ENGLISH SECTION

WAR

- P S AISHWARYA , XII A

Being a soldier, it isn't easy to kill a person
who like me fighting for his country
It isn't easy to see my fellow mates writhing in pain and agony
It isn't easy to give in to death and accept my defeat
It isn't easy to look in the eyes of the fellow soldier which like mine are engulfed with fear and loneliness
It isn't easy to disregard the hopes of my loved ones
It isn't easy to accept that there might be no tomorrow
But as the cool Breeze of freedom embraces
the body it alleviates all the pain and sufferings

MY DAY AT SCHOOL

- KHUSHI YADAV, XII A

The day starts with morning assembly,

And ends with enjoyable memory.

All I remember about was our

Dedicated teachers teaching

Us to read and write.

Science, math, history and Biology

Are the subjects that

we spend long hours learning

but what we waited for was lunch break and games period.

Friendship was the only reason for going school.

HAPPINESS

- Mokshita Gulati, VII

Happiness is not just a feeling,
It's a heavenly joy,
It's got by people who do good
Let them be a girl or boy.
Happiness is the diamond or gold
Which can't be brought or sold.
No one can think of life without happiness' touch,
There is nothing in the world, more precious as such.
You can't get it from money and luxury,
You can't get it , even from gold treasures,
Happiness is felt and known only when
You're to help some others.

SCHOOL

– P S AISHWARYA , XII A

27th March 2023-the last day of my school. The school had organised a farewell for us 12th graders. I woke up early in the morning and Got dressed in a traditional bright blue saree with fine silk embroidering that I had been saving for this day. I was really enthusiastic and happy and couldn't wait to reach school. It would be the last day in my school life after which I will be going to college where there will be no restrictions, no uniform, no rules. I will be totally free. With these thoughts in mind I read school. The decoration, I will have to say, were splendid. I couldn't imagine how much the school must have spent on it. After everyone arrived the programs started, a few speeches by the students and teachers, dance performances, group songs, a few skits. After that we had a group photo and then we took individual photos too. Then they started serving refreshments so I helped myself to a few too. I was having a great time and was chatting with my friends when suddenly there was a brief announcement right after which they started playing a whole compilation of all mini random videos taken by the students throughout the year. I saw myself there ,laughing, fooling around, irritating others and was suddenly struck by flashbacks of getting scolded by teachers for silly mistakes, bunking the class, sneaking phone to school, controlling my laughter on some stupid joke made by my friend between the class, eating lunch while the teacher was teaching...before I knew it tears started rolling down my face, I just couldn't stop crying, the reality of the situation finally started sinking in. I would never see my teachers, that playground, that classroom, my friends ever again. we would part waste forever. I was too confused, helpless and embarrassed as my 1000 rupees makeup must have been ruined. My friends comforted me an even though I stop crying, there was this empty feeling deep down in my heart. It's so strange that on the first day of school we enter crying and on the last day of school we leave crying. Tears remain constant but the emotions varied.

YELLOW

- KAUSHANI GUHA, XII A

Yellow is what is friendship
Yellow is a bond built by trust,
A bond built by the hope of them being there.
Yellow is someone who we can rely on,
Someone we keep our trust on.
From fighting for the eraser,
To erasing each other's tears.
No matter how much we argue, how much we fight,
I'll always be the one to bring a ray of light.
At the end of the day, you're the **YELLOW** in my life.

WAR INTO PEACE

-KHUSHI YADAV, XII A

It was the mid of November and was raining. There was a silence except the Pitter patter of raindrops. A man named Harish Singh was sitting on a chair and sipping a cup of tea. He was watching TV, there was a debate going on a war that was happening for 2 weeks and it still going on. The movement he kept the cup on the table, the phone rang, he picked up and said, " good morning sir! I will be there in 30 minutes". He went to his unit and saw his chief was waiting for him and he said, " Jai Hind sir!" and then sir replied "Jai Hind!", the day has come to execute our mission. Your team is waiting for you in the ship, you may proceed now. Harish went to his ship and checked everything that if they are ready to go. Then the ship started and they sailed for about a month and then New Year came and that day was very scary because their ship was small and, on that day, they suffered from a violent Storm with strong winds, that had destroyed their ship. This led to a huge hole in their ship from where the half of the ship was filled up of sea water. Then Harish realised that during his training period, he had made a motor pump which pumps out the water and luckily, he had brought his motor pump which had helped them to recover their ship but as there ship was not ready to fight the war, so they reported this to their unit through the signals and a message was received from their unit and in that message it was written that their country and enemy country's Prime Minister had resolved the problem and there is no need to have a war against them. So, the next day the ship returned to their country.

A 'SCIEN-TIFIC' LIFE

- KHUSHI YADAV, XII A

Just like a saturated solution,
Her mind is the solution
and excuses are the solute .
Just like Le Chatelier's Principle
the more she leave ,
the thoughts of failure
the more she achieve,
the ways of success.
Her plans are kinetic energy
which has some velocity.
Just like gravitation
She is an erudition,
that attracts towards learning.
She is that micro organism
which causes parents feel proud.

I WISH I COULD

- Mokshita Gulati, VII

I wish I could
Fly up high
Then I would've
Crossed the sky!
I wish I could
Stay always small,
Cuddling with mom
And playing with doll.
I wish I could
Talk to the birds,
And have the ability
To understand their words.
I wish I could
Revive the nature & woods,
And fulfil all my
Wishes and coulds!

LIFE OF A TEEN

- PRAJAKTA VINOD PASHTE, XII A

My life is a mess
Every other day it's a different stress
Sometimes it's the science stream
Sometimes it's how to apply this face cream
Sometimes it's how to play football
Sometimes it's 'when will I grow tall?'
Sometimes it's what will people think
Sometimes I solve these problems in a blink

Family problems, career choices, society
Make me frustrated!
That's why I find myself ill-fated
But, I will overcome this
And going to find the happiness
that I miss
It's the matter of time
Maybe right now its others;
Someday it will be mine.

HAPPY TEACHERS' DAY

- PRAJAKTA VINOD PASHTE, XII A

My journey started 12 years ago
And by your support it continues with a smooth flow
Some of you taught me how to use a tool
Some of you taught me how to be cool
Some of you taught me how to respect
Some of you taught me how to change my views in different aspects

You helped us solve problems in math
You helped us find the right path
You taught us the concept of sharing
That is how we learned what is caring

You are not just a teacher
You have become a part of my life
Here is wishing you a very happy and healthy life

NATURE IS EVERYTHING

- Prathana Gaur, XI A

Nature is everything ,
Nature is everywhere u go,
Nature has power to ease life of human,
Mountains , clouds, sea , forest what is called beauty of nature,
Nature gives life to all creature on this earth,
It never expects anything in return,
In return they only want is love , care , respect and admiration to their free gifts,
In nature there is more to be seen,
In nature I find the way I love myself.
In nature everything is worth more than gold.

THE HEALING BEAUTY

- PARINAY SHARMA, XII A

Well, writing Something is easy…
Smooth as a flower of daisy.

So I thought…
Why not write something,
Write Something on Nature,
Like a poem or a story so
Because that's part of literature
And to write that,
You don't have to be a special creature.

Nature is not all of just beauty,
Though it's full of animals which are cutie.
It's about the wonders it give,
It makes your heart live.
Enlightening the emotions you have,
Feels completely like a rehab.

The Magnificent Beauty,
The quiet Peace,
Settles down your mind
Clears every stress you are bind with.

Diving into the endless sea
Climbing up the high mountains with a cup of tea.
Travelling the land made of fire,
Skiing on the long sheets of ice is everyone's desire.

In the end, it is the start,
From zero to infinity , it is an endless journey,
Like a shopping mall full of carts.

THE SOLDIER'S WORLD

- PRAJAKTA VINOD PASHTE, XII A

It starts from fear
And end with tears

It starts from fear
And end with tears
Every second of our life is like a night mare
We live for you
We die for you
We hope before war
We get our enemies clue.

We are the protectors
but also have traitors
Who is it?
Is it you! Or me?
We don't know
That's why we can't trust anyone
This is our world
A world full of war,
fighting, winning, loosing, dying, living.
Yes, this is a soldier's world.

A SOLDIER'S PRIDE

- PARINAY SHARMA, XII A

When I opened my eyes, it was half-black,
Shocked was I, lost my track.

Hearing the rapid blasting sound was I.
Some Screaming, Some Shouting and some just silent,
Above me was a grey sky.
I was soaked in sweat,
With my clothes being painted red.
I tried to lift that little real toy of mine,
Missing a leg but I was still fine.
Trying to give it all,
Even the last piece of my soul.

But, I had to fulfill my duty
To my land, to my country and for my little cutie.
I was all set was to lie in that Flag,
Though I was full of holes, it was like a gag.

Then I pulled the trigger, with all my might,
Remembering, when for the first time I held my daughter that night.
Remembered the day when I first met my wife,
Probably the best day of my life.
Remembered my mother and her toldings,
With her lovely scoldings.
Thought of my brother & father,
Remembered the mischiefs we did together.

Then with a lightining speed, a green stone beside me parked
Making the half-black, a Complete dark…

THE ETHEREAL NATURE

- KAUSHANI GUHA, XII A

I'm jealous of the nature,
For how breath-taking she is.

The crimson colour of sky,
During sunsets makes me want to be her.
Her white fluffy clouds, green trees filled with luscious fruits
Makes me want to be her.

The beauty of whom no one can compare to,
The things no one can possess but her,
makes me want to stare at her,
Till I breathe and then drown into her soil when the day comes.

I wonder, how something can be so fascinating.
Her ornaments of flowers, green attire and blue hair with white strokes
Makes it really difficult for one, not to stare.

I'm jealous of her for how she makes us go crazy with her beauty.
Oh, I'm so jealous of her…

SCHOOL IS A HASSLE…!

- PARINAY SHARMA, XII A

Waking Up in the morning, to go to School.
I don't like it, wish I could go to a pool.
Getting ready and wearing the uniform,
Why is there such an unrequired norm?
Travelling to the cranky institution
I don't really get a good premonition.

Reaching my class with my heavy bag
My backbone gets a lag.
Standing in the assembly for a while
Sweating in the summer, getting a cold in the winter chill.
Teachers trying to teach the Concepts,
Isn't no way I am getting Alliteration, because I slept.
Maths trying to invade physics,
Physics trying to catch up to maths,
Chemistry just getting in its own path.
But there is a period for which I desire,
probably all students wish for it,
Of course, it's the games dammit!
(Which we don't get !!)

But there are very precious moments,
Moments with Friends & teachers,
Fun teasing and enjoyment with them,
Is what makes my day.
I will store these memories till my breath & be nostalgic about it,
When I lay on bed.

School is like another home to me,
And the people there my Family,
School is not something that we should all just hate, we should love it.
But In the end,
School is a hassle, nothing more than that!

EXAM – A JOY

- SURABHI DATTA, XI A

Exam is a joy,
Where we know and try,
And a place where one should never cry.
Everything seems familiar to us,
But our nervousness makes us miss the bus,
But at the end happiness comes back to us!
We have a tension of whether we will pass,
So, we pay no attention in the class,
We are just lost in our own thoughts!
We think about what we have learnt in past,
So that, we can recall our answers fast.
And the paper is completed at last!
After the exam we heave a sigh of relief,
And within our self we get a familiar belief,
We get a chance to play & bounce, sleep & drowse
After the exam we are free,
Whether we go after a bee, or climb up a tree,
Then we go to the world of dreams,
And eat chocolate & strawberry ice-creams!

WE ARE A FAMILY

- PRAJAKTA VINOD PASHTE, XII A

We are the host
We are the leaders
We are the ministers
We are the listners
We all live on one planet
We are all one family
Yes its 'we'
We are all one

We are a family of 20
We discuss the global economic issues
From big to plenty
We help each other
To make people life better

The most important thing is resource utility
So,that we can have financial stability.
We all do quality investment
To do a future betterment

But there is a problem
The resources are less
And the demands are more
That's why we can't fulfil all people need
As we have other poor to feed
Poverty and climate change are the major subjects
That's why we all come together to minimize the effects
Yes, this is our G20
One Earth One Family One future

HAUNTED LITTLE HOUSE

- KAUSHANI GUHA, XII A

Was it really worth losing our dears?

Was it really worth shedding our tears?

There was a time of my merry life,

With all my dearests' sparkling eyes.

How I miss the place once I called home,

But Oh! Now I'm all alone.

Home is not a house, but our darlings in the house.

There still stands our little white house,

On the top of the hills covered with clouds.

With no life stands like an abandoned haunted house.

Haunted by the memories of the ones I loved,

Memories of the joys we shared.

Was it really worth losing our dears?

Was it really worth shedding our tears?

The Answer to this still remains quiet,

Like my little white haunted house.

CHORUS OF NATIONS

- KAUSHANI GUHA, XII A

From a universe, In a world of nations, diverse and vast
Leaders gather, in a union unsurpassed.
G20, a platform, where nations unite,
seeking Universal Harmony, a common light.
From every corner, they convene,
Representing nations, a global scene.

Amidst the challenges, they pursue to find,
A common ground, with an open mind.
Heads of state and ministers, minds of great might,
Engaged in dialogue from morning to night.
With discussions and debates, ideas exchange
For a world of better change.

Humanity's challenges, they bravely address,
Poverty, inequality, striving for progress.
Addressing social issues with compassion and grace,
Creating a world where all find their place.

A beacon of hope, where leaders gather,
In the G20 gathering, together they cope.
For in pursuit of universal harmony's quest,
A brighter future for all we can manifest.

A chorus of nations, striving for unity,
May their efforts resonate far and wide,
Spreading universal harmony with each stride.

CALL HIM FRIEND !

- SIDDHESH S SAKHARE, XII A

In the summer, hike the last leaf,

He is the one who has my back,

He is the cure to my pain,

He is as bright as rainbow

Springing colours in rain.

He is the helper,

He is the adviser

I call him Friend

Who I am, find me?

Everytime, I seek myself.

A strand like a must in a forest.

I am thought I am a feeling.

My friend is serenity My enemy is division. I

am I am relation an amity.

Peace is my weapon, emeness is my defense, I

am

a balance an ultimate am power!

LIFE AS IT IS

- PRIYANKA GAIKWAD, XI A

It must come, one must go,
Egressed far beyond,
You reap what you sow.
You had none,
The way you came,
And shall part alike.
It is forged,
Fear no more,
Memories shall sing a lullaby
For your slumber.

They mourn and mourn,
May forget,
No remorse will be left behind.
It must come, one must go,
You shall reap what you sow.
Oh, keep walking, don't look behind,
The telltale lore shall wash the earthly shore.
Someday you'll leap the great fall,
Someday the slumber shall call.

REFLECTIONS

- SURABHI DATTA, XI A

Tonight, standing in my balcony,
When I look at the dark sky,
I see something shining brilliantly, guess what?
It is the beautiful moon I see,
Never have I seen anything more beautiful than thee.

Looking at the moon I recall,
Of the days I used to feel low,
And just decided to go with life's flow,
Which is sometimes high and sometimes low.

Some days were pleasant and some were gloomy,
But I won't complain, 'coz they made me, ME'.
Yes, I made mistakes,
Yes, I also wanted to give up at times,
But today, looking at the moon, I realized,
It was all a part of the process,
To make me, ME.

SCHOOL DAYS

- MOKSHITA GULATI, VII

Marvellous days,

With lots of plays.

Playing funny games

With several names.

Each beautiful day

With a positive ray,

We all have spent

Sometimes friendship sometimes quarrels,

This drama never ends

Drama, mischief and lots of fun

In the school we all have done,

Having lots of enjoyment

And ample quantity of fun.

Everything will be same and

Nothing will change,

Except our age

In this lovely school range.

SUNSETS

- Shravni Vinay Raul , XII B

With naked eyes and a beautiful soul
I looked around ,
And guess what I found
A winter sunset is prettier than usual.
At the top of a hill feeling the breeze that's so chill ,
With the sound of water and butterflies flying around birds chirruping with a pleasing sound
And guess what I found ,
A winter sunset is prettier than usual.
I sat down , connecting myself to the soil
reminds me the little girl I was ,
Who'd dance with trees , going to the beaches the evenings ,
Living it to the fullest AS SHE SCREAMS
With joy , she again realises that a winter sunset is prettier than usual .
To breath I stand up again,
The sky seems to be calling my future self
Probably standing in a apartment she owns
Watering the plants giving back what she owes
She looks at it, and guess she'd again realizes that
A winter sunset is prettier than usual .

FATHER'S DAY

- Mokshita Gulati, VII

A father is not a relative,
He's our best friend
His unconditional love
Will never end.
He's your first teacher
And best fellow in your toy town,
He'll always stand with you
And will never let you down.

Father is a hero
For every person,
He is compassionate,
For each & every one.

Unconditional love,
he will always pour,
Father is our best partner
And will never make us bored.

When mother gets angry,
Behind father each child hides,
He'll make you enjoy
on long and exciting rides.

He will fulfil your wishes
And can make you fly like a dove,
He'll always spread,
Infinite care and love.

THE MELODIES OF SCHOOL DAYS

HARINI MEENAKSHINATHAN, XII B

A place of learning and play,

Where children come to grow each day.

With pens, books and curious minds,

New knowledge and ideas we find.

Teacher's guide with patience and care,

Encouraging students to explore and share.

Friends are made , memories are born,

Lessons learned will last beyond.

Lunchtime will always be a special treat,

A break from books , a chance to eat.

Sharing stories and making jokes,

It was a time to unwind and let loose.

Recess brought laughter, games and fun,

A chance to stretch, in the warm sun.

School is where dreams take flight ,

Where future begin to come into sight.

THE TRUE ESSENCE OF FRIENDSHIP

- HARINI MEENAKSHINATHAN, XII B

Friendship is a bond that ties,
Two hearts with strings that never dies.
A bond that grows with time and care,
A bond that's precious and rare.
Their time , their love, their trust , their all,
Friends will be there to catch you when you fall.
With laughter , smiles and happy tears,
Friends will be there to calm your fears.
Friends are the light that brightens you day,
They lift us up and show the way.
Friendship is a gift that's treasured,
A bond that's timeless and never measured.
With friends by your side , life's journey is sweet,
For true friendship is a true life's treat.

BEAUTY OF NATURE

- HARINI MEENAKSHINATHAN, XII B

Beauty of nature is magnificent,
The peacefulness is hundred percent.
The beautiful rivers,
Its ribbon like body.
The beautiful mountains,
Silent and strong.
The fluttering butterflies,
And beautiful bee hives.
The calm beaches,
And the beautiful skies.
The rain patting rooftop.
The dense forests where trees grow tall and green,
Makes our earth beautiful and clean.
The splashes from the waterfall,
Beauty of nature is overall.
The birds and trees,
Dance with a beautiful breeze.
The natures beauty is so pure and true,
It is a treasure for me and you.

DAINTY

- SRINJANI SAMADDAR, IX B

Look at that small and dainty
It is messing with my sanity.
With colours so painty
still it is so dainty!

It stands there alone and strong
but calm, and soft.
It won't hurt a soul, but
oh; it will wretch your heart
when it is torn from its mark.
Still so dainty!
Stretches all across its skin
it is a beauty, isn't it?
While the delicate flower believes it's own accord
I continue loving that dainty orchid.

ASK YOURSELF!

- Shravni Vinay Raul , XII B

Ask yourself
Is satisfying your taste buds worth losing the ability to lift your groceries at 50
Is starving yourself worth all the after sickness
The fats and oils you cutoff
The rice and milk you avoid
Are a part of a balanced diet
And are things to be enjoyed
But saying good bye to sugar is surely a choice that you make living better
Ask yourself
Why does your grandma feels 30 at the age of 60 and why your grandpa can walk a mile more than you can
It's the millets and pulses that got them there increasing their life span
Ask yourself
What could compliment nutrition and make you the person you want to be
It's nothing but exercise as I see
Get moving in the gym or the house a little
Not knowing where to start stop scrolling and browse some lit.
Slowly and steadily you will get there looking back you would surely thank yourself.

A DAY

- Nandini Bhantar, XI A

Today I had a bad feeling,
But when I went out
I saw flowers smiling
And trees dancing,
Seemed like both were cheering.
Cool breeze passed by me,
While searching my cars key,
When I looked at the orange sky,
I saw birds flying high.
A beautiful sunset and a shining moon,
Then I decided to drive very soon.
After driving so far,
I looked at the star,
And it felt so pleased,
That I ended up by saying cheese.

MAYBE OUR LOST FRIENDSHIP

- Shravni Vinay Raul , XII B

Friendships to me never meant talking all day
It meant spending time together
Even when we had nothing to say
The poet inside of me would never stop when told to write about them
The outgrown friendships would never be the same
And probably when we grow up we would not even remember each other's names
But the poet inside of me still writes
I wish they do well in life
And even if we talk after months
I wish for the connection to still remain the same
We would have those "remember when" conversations
How at the age of 15 we got ourselves into the most embarrassing situations
Laughing till our stomachs ache
Bridging the gap and realising the difference it makes
Our laughs making it funnier
All of it together makes me feel even luckier.

THAT'S WHAT THEY SAID

- Shravni Vinay Raul , XII B

As the wind passed by it told me to be free ,
Free from all the expectations and what the future would look like
And just sit there for a while .
As I look up in the sky
I got a reassurance that I too,
Was beautiful with all my flaws.
It taught me to fall in love,
In love with my appearance and the person I was.
It made me appreciate all my phases and told me,
It's okay to disappear and come back when I feel myself again.
And the rains oh god!
They ensured that it's okay to cry,
I can be expressive of my emotions without being called sensitive or having to justify.
The dry trees flourishing again reminded me that I can start all over
I can fix it not this but for sure till the next summer
The scent of every season left an impact
With differences nobody hates
And along with every blooming flower my old soul rejuvenates.

COLONIAL ECHOES IN VERSE

- Srinjani Samadaar, IX B

Beneath the banyan shade, history weaves
India's saga of valiant leaves.
Freedom fighters, a constellation bright,
In the colonial night, their unwavering light.

Gandhiji spectacles, a symbol clear.
Yet, others joined, drawing near.
Bhagat Singh with his fiery zeal,
Pierced struggle like a shiny steel.

Jhansi Ki Rani, Lakshmibai's might,
Mounted on courage in the colonial fight.
Subhash Chandra Bose, with his thundering voice,
Led the charge, making freedom a choice.

Amidst the tales of courage and might,
Colonial deeds cast a chilling blight.
Salt taxed, sea bound tyrannic decree
Yet, defiance brewed in the Indian seas

In the year 1857 it all came undone.
The mutiny spoke, and a rebellion began.
Soldiers, sepoys with courage ablaze,
Against oppressive rule, their arms raised.

Jallianwala bagh, a scar so deep,
The wounds of a massacre history weeps
Colonial brutality, an undeniable stain,
Yet, from the pain a resolve to regain.

The salt Satyagraha a coastal crusade,
Against a tax that left many dismayed.
From Dandi's shore to the nation's heart.
Salt in hand a movement would start.

In the tapestry of India's past
Freedom fighters stood steadfast.
Against oppression, they took a stand,
For their free India a promised land.

Through the darkness, a nation's cry,
Echoed beneath the azure sky.
In the struggle against colonial might,
India emerged, bathed in freedom's light.

DEVELOPING SCIENTIFIC TEMPER

M.GOPALA REDDY

PGT (PHYSICS)

As per NEP 2020, among the several goals of education, the one that appeals to me the most is "**Developing Scientific Temper**" among young minds. Scientific temper has been defined by several educationists, philosophers and scientists in different way. Scientific temper means an individual's attitude of logical and rational thinking. Scientific temper is a way of thinking and acting that uses a scientific method which includes observing reality , questioning logically, testing hypothesis, experimentation , evidence based data, collecting data, analyzing data ,making inferences & conclusions and finally communicating .

Our Indian Constitution upholds the cultivation of scientific temper as one of the fundamental duties of citizens. Scientific temper is an attitude or a way of being that involves application of the mind, application of logical analysis, willingness to meet with new facts and evidence without pre-conceived notions, and willingness to question conclusions based on newer evidence. What does this entail or lead to? Necessarily an open mind, the ability to consider facts as they exist, discuss, debate, develop rationale, argue, analyze before concluding, and the willingness to live with the co-existence of several truths. Even to an untrained mind, science automatically means knowledge, experiment, questioning, gathering of data, reason, something that is not mystical but can be proven, touched, felt, smelt, experienced, etc. Scientific temper would mean comfort with all the above and more. Very rightly, the distinction has often been made between "science" and "scientific temper". While science gives us knowledge, tells us the logic, provides an experience, explains why things exist the way they do, "scientific temper" would guide us on the constructive use of the knowledge, abilities and experiences that science equips us with. There is both wisdom and morality involved in the usage of knowledge. Thus, for instance, scientific

temper would lead to an attitude of “secularism” where you respect others' religious practices, rather than developing blind faith in a single religious practice and propagating that it is the only “right” way to practice religion.

There is no place for “superstition” and “blind faith in mythology” in the world of scientific temper. While mythological stories could be powerfully used to lead to virtual learning for young minds, forcing people to believe in stories that have no evidence is counterproductive to the process of forming a logical society. This can also be extended to learning history where one has to seek evidence, examine the same, connect to several other frames and conclude reliably as to what would have happened during a certain period rather than resorting to ambiguous interpretations based on one's own belief of what must have happened. I would go the extent of saying that scientific temper has greater implications for the broader way in which society and human beings think, respond, and conduct themselves, than its implications for science itself.

To me, scientific temper is accepting newer methods of thinking, continuous questioning, being open to accepting that your own experiences, views, and conclusions need continuous re-calibration, and breaking stereotypes.

"Science is a way of thinking much more than it is a body of knowledge."
- Carl Sagan

प्राथमिक विभाग

YOGA

- SHRAVANI BAGADE, III- C

Yoga is the most favourable method to connect to nature by balancing themind-body connection. A type of exercise performed through the balanced body and needs to get control over diet, breathing, and physical postures. It associated with the meditation of body and mind through the relaxation of the body.

1. Maintains Healthy Heart
2. Builds Muscle Strength
3. Strengthens Your Bones
4. Improves Blood Circulation
5. Boos up your Immunity
6. Lowers Blood Sugars
7. Reduces Stress
8. Improves Flexibility
9. Supports Healthy Joints
10. Better Sleep.

SAW MY TEACHER ON SATURDAY

– HRUDAYEE . R. GAIKWAD

Saw my teacher on Saturday,
I can't believe it's true!
I saw her buying groceries,
Like normal people like us!

She was searching for bread
But then there was this eye contact
She gave me a lovely smile
Oh my god! I thought I'll die.

"Oh hello! Ms Appleton"
I mumbles like a fool!
I greeted her the way
I would greet her in school.

Some people think it's fine
To see our teachers' around!
But seeing them work like us
Just looks so divine.

FOOTBALL! FOOTBALL!

- PRABODH PARDHE

When I play football
I play, I fall
But we share the joy
Of playing, of togetherness.

We are not afraid
When we play
There's just enjoyment
The focus is only to goal!

We feel pain
But it's healthy to run
We care for each other
It's not easy as it seems
To play football is our dream!

RAIN ON THE GREEN GRASS

Rain on the green grass,

Rain on the tree.

Rain on the green grass,

Rain on the tree.

Rain on the housetop,

But not on me

WORLD BIOFUEL DAY

– SHREYA SAWALE, V C

World Biofuel Day is observed every year on the 10th of August to create awareness about the importance of non-fossil fuels as an alternative to conventional fossil fuels.

- The day highlights the various efforts made by the Government in the biofuel sector.

- A number of initiatives have been undertaken to increase production and blending of biofuels since 2014.

THEME

This year the theme of the World Biofuel Day is *"Production of Biodiesel from Used Cooking Oil (UCO)".*

BENEFITS OF BIOFUELS

- Reduction of import dependence on crude oil.
- Cleaner environment
- Additional income to farmers
- Employment generation
- Synergy to government of India initiatives for MAKE IN INDIA, SWACHH BHARAT, ATMANIRBHAR BHARAT

An article on the first school trip to the

"MAULI ARGO FARM NATURE RETREAT "

- AKSHAYA PARIKIPANDLA ,V C

On 10th January 2023, our school organized a one-day trip to Mauli Argo Farm Nature Retreat, a beautiful and serene place near Pune. The purpose of the trip was to provide the students with an opportunity to enjoy nature, learn about organic farming, and participate in various fun-filled activities. The trip was accompanied by four teachers who supervised and guided the students throughout the day.

We left the school at 8:00 am and reached the farm by 10:00 am. We were welcomed by the staff of the farm who gave us a brief introduction about the place and its features. We then divided into groups and started exploring the farm. We saw different types of crops, fruits, vegetables, and flowers grown organically. We also learned about the methods and techniques of organic farming, such as composting, mulching, drip irrigation, and pest control. We were amazed by the diversity and richness of the farm.

After a tour of the farm, we had a delicious lunch prepared with fresh and organic ingredients from the farm. We then proceeded to enjoy some recreational activities, such as zip-lining, rope climbing, archery, and cycling. We also played some team games, such as tug-of-war, treasure hunt, and relay race. We had a lot of fun and laughter while competing and cooperating with each other. We also made some new friends and strengthened our bonds with our classmates and teachers.

The trip ended at 4:00 pm and we boarded the bus to return to the school. We thanked the staff of the farm for their hospitality and kindness. We also thanked our teachers for arranging such a wonderful trip for us. We shared our experiences and memories with each other on the way back. We felt refreshed and rejuvenated by the trip. It was a memorable and educational experience for all of us.

LAZY JACK

– SWAMIRAJ DONGRE

There was a boy named Jack .

He was so lazy. He couldn't even bother to change his clothes. One day he saw that an apple tree full of fruits in the yard. He wanted to eat those apples but he was too lazy to climb up and fetch those apples. So he sat under that tree.

Jack waited for the fruits to fall off. He waited until he was too hungry.

But the apple didn't fall and out of his laziness he didn't climb and stayed hungry.

MORAL : Laziness can get you nowhere. If one wants something, one needs to burn the midnight oil for that .

HUMANOID ROBOT – VYOMMITRA

- Ovi Kumar Engale

Class: - III C

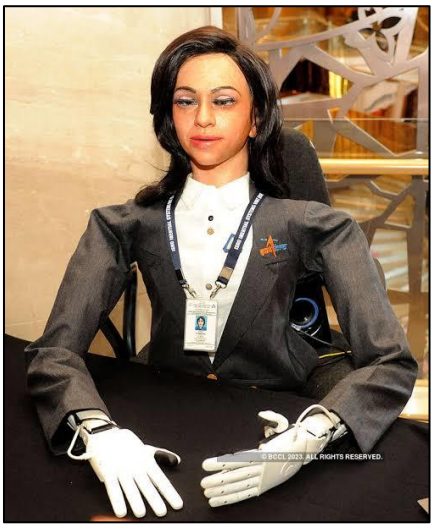

A **humanoid robot** is a type of robot that has a similar body shape to a person.
The first robot was invented by **George Devol** in **1954** and was ultimately called the **Unimate**.
This robot was used to lift heavy loads.
AcYut known to be India's first indigenous robot was developed by undergraduate students at the **Birla Institute of Technology and Science (BITS) Pilani, India.**

Vyommmitra (From Sanskrit 'Vyom' means 'Space' and 'Mitra' means 'Friend') is a female looking spacefaring humanoid robot

being developed by **Indian Space Research Organisation (ISRO)** to function on board the **Gaganyaan** a crewed orbital spacecraft.

Vyommitra was first revealed on **22nd January 2020** at the **Human Spaceflight and Exploration Symposium in Bengaluru.**

It will accompany Indian astronauts in space missions and will also be a part of uncrewed experimental Gaganyaan missions prior to the crewed spaceflight missions.

सत्र के गतिविधियों की झलक

राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता के दौरान संयुक्त आयुक्त महोदया का दौरा

हर घर तिरंगा

एकता दौड़

तरूणोत्सव के दौरान सुलेख कार्यशाला

प्राथमिक विभाग - कविता पाठ

एक भारत श्रेष्ट भारत - सांस्कृतिक नृत्य

रूट्स टू रुट्स - भरतनाट्यम की कार्यशाला

छात्र परिषद का अलंकरण समारोह

जी - 20 के अंतर्गत आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता

एक भारत श्रेष्ट भारत - कक्षा गतिविधि

राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता - बैडमिंटन

प्राथमिक विभाग - खेलकूद गतिविधि

[विज्ञान कक्षा गतिविधि]

[एक भारत श्रेष्ठ भारत - युग्मित राज्य की झलकियाँ]

[कब्स एवं बुलबुल गतिविधि]

[रूट्स टू रुट्स - तबला कार्यशाला]

[चित्रकला प्रदर्शनी]

विद्यालय परिवार के सदस्य